ज्योतिषाचार्य और पिशाचिनी

अनिल शेखर "अमस"

©Ami @ www.thrillingtravel.in

ज्योतिषाचार्य

और

पिशाचिनी

डिस्क्लेमर

प्रिय पाठक पाठिकाओं,

नमस्कार,

अभी तक आप लोगों ने तंत्र के विभिन्न पहलुओं पर कथाएं पढ़ी हैं । यह कथा एक पिशाचिनी और उसके प्रपंच पर आधारित है । जैसा कि मैं अपनी सभी कथाओं में आपको स्पष्ट करता रहा हूं यह कथा भी पूर्णत: काल्पनिक कथा है । इसका किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से कोई संबंध नहीं है । अगर ऐसा कोई भी घटनाक्रम इससे मिलता जुलता आपकी जानकारी में हो या आपने कहीं सुना हो तो वह महज एक संयोग है ।

भूत प्रेत पिशाच आदि के विषय में कई प्रकार की कथाएं प्रचलन में है और यह लगभग हर संस्कृति में और हर धर्म समाज तथा देश में कही तथा सुनी जाती है । इसलिए इनके होने या ना होने के विषय में कोई दावा नहीं कर सकता और मैं भी ऐसा कोई भी दावा नहीं कर रहा हूं ।

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गई है और इसमें लिखे हुए प्रसंगों और कथानक को आप केवल एक काल्पनिक कथा के रूप में पढ़ें तथा उस का आनंद लें ।

इसमें बताए गए प्रयोग तथा उसके लिए प्रयोग की गई विधियां काल्पनिक है और उनका प्रयोग आप भूल कर भी न करें ।

शमशान को हिंदू धर्म में आत्माओं का अंतिम गंतव्य माना जाता है । इसलिए श्मशान से आने के बाद आमतौर पर हम स्नान आदि संपन्न करके ही घर में प्रवेश करते हैं । यह इसलिए किया जाता है ताकि अगर किसी प्रकार की शमशानी शक्ति हमारे साथ आ गई हो तो वह घर के बाहर छूट जाए और हमें किसी प्रकार से परेशान ना करें ।

किसी भी प्रकार की शमशान, कब्र, मजार आदि को हम मृत व्यक्तियों का स्थान मानते हैं । ऐसे स्थानों पर मृत आत्मायें निवास करती है । यह वे आत्माएं होती है जो किसी न किसी इच्छा की पूर्ति के लिए भटकती रहती

हैं । इसलिए आवश्यकता ना हो तो ऐसे स्थानों पर जाने से बचें । खासतौर से महिलाओं को बालिकाओं को और बच्चों को इन स्थानों पर ले जाने से बचने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि ऐसा माना जाता है कि उनके ऊपर मृत आत्माओं का प्रभाव बड़ी आसानी से हो जाता है । इसलिए जब भी ऐसे स्थान पर जाएं तो सावधानी बरतें । कोशिश करें कि वहां से कोई भी चीज लाकर घर में ना रखें, ताकि आपको किसी प्रकार की परेशानी ना हो ।

सनातन धर्म में देवी देवताओं को पूजने की परंपरा है । हम उसी परंपरा का पालन करें तो हमारे लिए श्रेष्ठ होगा । किसी भी प्रकार की मृत आत्माओं की शक्ति या पैशाचिक शक्तियों की सहायता लेने का प्रयास कभी ना करें, क्योंकि यह अंततः आपको मुसीबत में डाल सकता है ।

यह हमेशा ध्यान रखें कि जिस की प्रवृत्ति जैसी होगी वह वैसा ही कार्य अंत में करेगा ।
यदि आप किसी जिन्न, भूत, प्रेत, पिशाच आदि की साधना करेंगे या सिद्धि करेंगे तो यकीन मानिए कि

आपकी मृत्यु के बाद वह आपको अपनी योनि में खींचने का प्रयास अवश्य करेगा ।

जब साधक युवावस्था में रहता है तो उसकी शारीरिक तथा साधनात्मक शक्ति ज्यादा रहती है । ऐसी स्थिति में यह पैशाचीक आत्मायें उसके नियंत्रण में होती है और उसके द्वारा कराए जा रहे कार्यों को पूरा करती रहती है ।
जैसे-जैसे साधक की आयु बढ़ती जाती है.....
उसका शारीरिक बल कमजोर होता जाता है और
साधना करने की क्षमता भी धीरे-धीरे कम होती जाती है.....
इस प्रकार से वह जब कमजोर हो जाता है तो यही पैशाचिक शक्तियां उसके शरीर और आत्मा दोनों पर नियंत्रण करके उसे अपने साथ अपनी योनि में भटकने के लिए ले जाती हैं ....

फिर शुरु होता है एक नारकीय और अंतहीन क्रम .....
जिसमें उस साधक की आत्मा घोर कष्ट को प्राप्त करती है ।

इसलिए सभी सुधि पाठकों से निवेदन है कि किसी भी प्रकार की मसानी साधनाओं में जिसमें भूत, प्रेत, जिन्न, पिशाच आदि को सिद्ध किया जाता है.....
कभी भी प्रवृत्त ना हो ।

यह न सिर्फ आपको मुसीबत में डालेगा बल्कि एक समय के बाद आपके परिवार के लोगों के लिए भी गंभीर समस्याएं खड़ी कर सकता है ।
ऐसा माना जाता है कि इस प्रकार की सिद्धियाँ दूसरों के नुकसान के लिए ज्यादा प्रयुक्त होती हैं और परिणाम स्वरूप आने वाली पीढ़ियों मे पैदा होने वाले बच्चों में गंभीर शारीरिक विकृतियां मानसिक विकृतियां हो सकती हैं ....
यही नहीं घोर दरिद्रता और विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाएँ, रोग, अकाल मृत्यु जैसे प्रक्रम भी सामने आते हैं ।
प्रकृति कर्मफल निश्चित प्रदान करती है !!!
अतः आप सभी से अनुरोध है कि इस प्रकार की साधनाओं की तरफ भूलकर भी न जाए ।

इसके विपरीत अगर आप देवी साधनाएं करेंगे या देवताओं की साधना करेंगे तो वह आपको अनुकूलता

भी प्रदान करेंगे और आप के कुल को ऐश्वर्य और समृद्धि प्रदान करेंगे । जिससे आने वाले समय में आपके बच्चे और उनके बच्चे श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त होंगे ।

देवाधिदेव महादेव और महामाया महाकाली की कृपा से आप गृहस्थ जीवन में रहते हुए सात्विक साधनाओं को संपन्न करें और अपने जीवन को पूर्णता प्रदान करें .....

ऐसी ही शुभकामना मैं आप सभी लोगों के लिए व्यक्त करता हूं और इस कथा की ओर आपको लिए चलता हूं ।

इसे एक काल्पनिक कथा मानते हुए आप इसका आनंद लें.....

सस्नेह

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

भूमिका

जिस प्रकार से देवी-देवताओं की योनियां होती है उसी प्रकार से अन्य योनिया भी इस पृथ्वी पर होती है..... ऐसा माना जाता है ।

इनमें से जो योनियों आमतौर पर लोगों के बीच प्रचलित है वह है अप्सरा यक्षिणी आदि जो सकारात्मक रूप से साधक को सहयोग करती है।

इसके अलावा कुछ योनियाँ ऐसी हैं जो साधकों के लिए कई प्रकार के कार्य संपन्न करते हैं लेकिन उनको नुकसान भी पहुंचा सकती हैं । इन्हें प्रेतनी या पिशाचिनी के नाम से जाना जाता है । इनमें जो पिशाचीनी सबसे ज्यादा लोकप्रिय कह लीजिए, या जनसामान्य में प्रचलित कह लीजिए, वह है कर्ण पिशाचिनी .....

कर्ण पिशाचिनी एक ऐसी विद्या है जो साधक के कान में किसी का भी भूतकाल बताने में सक्षम है । यह एक घोर तामसिक विद्या है जिसे कई प्रकार से सिद्ध किया जा सकता है । इसका सबसे प्रचंड स्वरूप वाममार्गी पद्धति से किया जाता है जो कि बेहद वीभत्स और जटिल है । उसी का वर्णन मैं आपके सामने प्रस्तुत कर

रहा हूं । इसमें वर्णित क्रियाएं और वर्णन थोड़ा वीभत्स और घृणित है इसलिए वे लोग जो अत्यंत संवेदनशील है वह इसे ना पढे ।

इसे पढ़कर या इसके अनुसार कोई भी आचरण ना करें । यह सारी विद्या गुरु गम्य विषय हैं और योग्य गुरु जो अनुभवी हो उस के सानिध्य में ही इस प्रकार की साधनाएं करनी चाहिए अन्यथा नुकसान हो सकता है । यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे तलवार चलाना अगर आप सीखना चाहते हैं तो आपको तलवार चलाने के विशेषज्ञ व्यक्ति के साथ तलवार चलाना सीखना चाहिए ..... अन्यथा आप स्वयं को चोट पहुंचा सकते हैं ..... और अगर गलती से तलवार गर्दन पर लग जाए तो आपकी मृत्यु भी हो सकती है । इस प्रकार की पिशाची साधना उसी श्रेणी की होती है । जहां पर अगर आपको हल्की फुल्की गलती भी हो जाए तो उसके गंभीर दुष्परिणाम आपको भोगने पड़ सकते हैं ।

कोलकाता के पास के एक गाँव मानाटोला मे रहने वाला महानंद चट्टोपाध्याय इस काल्पनिक कथा का नायक है । जो लगभग 32 साल का युवक है । अब तक

आपने पिशाचिनी का घेरा नामक कथानक मे महानन्द के पिशाचिनी साधना के विषय मे पढ़ा है ।

कथा अब तक :-

मेरा नाम महानंद चट्टोपाध्याय है । मेरे पिता देवानंद चट्टोपाध्याय एक प्रख्यात ज्योतिषी थे । मैं उनकी दूसरी पत्नी से उत्पन्न हुआ लाड प्यार में पला हुआ नालायक बच्चा था ।

मेरे पिता ने मुझे ज्योतिष सिखाने की बहुत कोशिश की लेकिन मैंने उस पर कभी ध्यान नहीं दिया अपनी मस्ती में लगा रहा ।

बाल्यावस्था मे पिता की मृत्यु हो गई । अब सारा कामकाज मां ने संभाल लिया । वह मुझे बहुत लाड़ करती थी । इसलिए मुझे कोई काम नहीं करना पड़ता था । सारा काम नौकर चाकर करते रहे । मैं ऐश आराम की जिंदगी बिता रहा था .....

समय आगे बढ़ता गया और इसी प्रकार मैं अपनी युवावस्था तक पहुंच गया .....

पैसा पर्याप्त था और माँ की तरफ से खुली छूट थी । इसलिए चमचों की फौज भी मेरे साथ चला करती थी और सभी प्रकार की अयाशियां मेरे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन चुकी थी ।

अचानक एक दिन मेरे जीवन में वज्रपात हुआ .....

मेरी मां ! जो मेरी सभी प्रकार से देखभाल करती थी वह अचानक चल बसी । इस घटना के बाद से सारा उत्तरदायित्व मेरे ऊपर आ गया, लेकिन मैं तब भी लापरवाह बना रहा ....

मैंने अपने खास चमचे कादिर को अपनी जिम्मेदारियां सौंप दी .....

वह पूरे जतन से काम करता रहा और हमेशा मुझे यह दिखाने की कोशिश करता रहा कि वह मेरा वफादार है ! मैं भी उसी गलतफहमी में रहा.....

लेकिन समय बीतने के साथ उसने सारी संपत्ति अपने नाम करा ली .....

पहले मुझे एक नशा मुक्ति केंद्र में भर्ती करा दिया । जहां बेहद कड़ा पहरा था और मैं वहां से बाहर नहीं निकल पा रहा था । लगभग 6 महीने तक वहीं पर रहने के बाद एक दिन मैं वहां से भाग निकला । वहां से भाग निकलने के बाद किसी प्रकार गांव तक पहुंचा ।

कादिर मेरी पूरी संपत्ति पर काबिज हो चुका था और मेरी गद्दी पर बैठा हुआ था । यह देखकर मुझे बड़े जोर का सदमा लगा .....

मेरी दाढ़ी बढ़ चुकी थी । कपड़े मैले कुचले थे लेकिन कादिर ने मुझे देखते ही पहचान लिया और अपने चमचों से पिटाई करवा कर मुझे नदी में फिंकवा दिया .....

उनके द्वारा पिटाई करके नदी में बहा दिए जाने के बाद भी मेरी मृत्यु नहीं हुई .....

मैं बहता बहता एक मसान घाट के किनारे जा लगा । वहां के डोम ने मेरी देखभाल की और उस समय में मुझे काफी मदद की ।

थोड़ा स्वस्थ हो जाने के बाद मैंने अपने खानदानी व्यवसाय ज्योतिष को अपनी आय का साधन बनाने की कोशिश की ....

लेकिन .....

क्योंकि मुझे कोई खास जानकारी नहीं थी इसलिए जल्द ही लोग जान गए कि मैं पोंगा पंडित हूं । यह स्थिति मेरे लिए बेहद शर्मनाक थी मुझे अपने आप से घृणा होने लगी । मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं अपने पिता का नाम खराब कर रहा हूं । इतने बड़े ज्योतिषाचार्य का बेटा होने के बावजूद मुझे पोंगा पंडित कहा जा रहा है यह सोच सोच कर मैं अत्यंत विचलित

होने लगा । ज्योतिष इतनी जल्दी सीख भी नहीं सकता था तो मैं किसी शॉर्टकट की तलाश में था ....

तभी.....

मुझे एक तंत्र साधना से संबंधित किताब मिली । जिसमें कर्ण पिशाचिनी नामक एक विद्या की साधना लिखी हुई थी । यह विद्या एक ऐसी विद्या है जो भूतकाल के विषय में सारी जानकारी देने में सक्षम है । यह पढ़कर मुझे लगा कि अगर यह सिद्ध मुझे प्राप्त हो जाए तो मैं बिना खास पढ़ाई लिखाई करे ही ज्योतिष के रूप में अपना स्थान बना लूंगा ।

मैं इस साधना को करने के विषय में विचार कर रहा था तभी अचानक एक अघोरी काला बाबा से मेरा सामना हो गया । उन्होंने 3 महीने तक मुझे विभिन्न प्रकार की अघोर स्थितियों में रखा और अंत में मुझे कर्ण पिशाचिनी साधना प्रदान कर दी ।

यह साधना अत्यंत वीभत्स तरीके से की जानी थी जो मैंने किसी प्रकार संपन्न कर ली । इसमें भी मुझे अपने मित्र डोम का सहयोग मिला ।

लगभग 20 दिन की साधना संपन्न हो जाने के बाद मुझे कर्ण पिशाचिनी की सिद्धि प्राप्त हो गई .....

इस दौरान बहुत कुछ घटित हुआ इसके विषय में आप इसके पूर्व की रचना "पिशाचिनी का घेरा" में पढ़ सकते हैं ।

पिशाचिनी सिद्धि हो जाने के बाद किसी भी व्यक्ति को देख कर मन में उसके विषय में जानकारी लेने की इच्छा कर लेने मात्र से ही सब कुछ स्पष्ट होने लगता था । अब मैंने पुनः ज्योतिष का कार्य प्रारंभ कर दिया । जिसमें मुझे कर्ण पिशाचिनी की वजह से पर्याप्त आय हो रही थी और मैं काफी प्रसन्न था ।

अब आगे .....

पिशाचिनी ने एक दिन मुझे अपना अलग से कमरा लेने के लिए कहा। यह एक स्वाभाविक बात थी क्योंकि डोम के झोपड़े में वह स्वतंत्रता नहीं मिल सकती थी जो उस पिशाचिनी को अपनी क्रियाओं के लिए आवश्यक थी। उसके निर्देशानुसार मैं चल पड़ा .....

उसने मुझे एक बंद पड़ी हुई दुकान के पास ले जाकर खड़ा कर दिया।

मैं वहां खड़ा होकर उसे देख रहा था और फिर मैंने बगल वाली दुकान से पूछा - यह किसकी है। वह बोला मेरी है।

मैंने पूछा - यह बंद क्यों पड़ी है ?

वह बोला - कोई किराएदार नहीं मिला है इसलिए खाली पड़ी है।

मैंने उससे उसे किराए पर ले लिया।

वह लगभग 6 फुट बाई 10 फुट की दुकान थी और उसके पीछे लगभग इसी साइज का एक कमरा भी था ..... जिससे लगा हुआ स्नानघर मौजूद था।

इतना मेरे लिए पर्याप्त था .....

मित्र डोम से विदा लेकर वहां आ गया । आने से पहले फिर से मैंने उसको कुछ पैसे देने चाहे लेकिन उसने कुछ भी लेने से इंकार कर लिया ।

संभवत: वह जानता था कि यह सारी कमाई पिशाचिनी के द्वारा प्रदान की गई है और इसे लेना ठीक नहीं होगा .....

जो भी हो उसने मुझसे पैसे नहीं लिए और इस बात का मुझे अफसोस रहा ।

मैंने उसे दो जोड़ी नए कपड़े खरीद कर दिए । जिसे उसने स्वीकार कर लिया वह भी काफी चिरौरी करने के बाद ।

बाद में मुझे पता चला कि उसने वह भी किसी और को दे दिया था और अपने पुराने वेशभूषा में आ गया था । संभवत श्मशान में रहने की वजह से उसमें एक प्रकार की निर्लिप्तता आ गई थी और उसे इन सब चीजों का कोई मोल नहीं रह गया था ।

खैर .....

डोम का प्रकरण वहाँ समाप्त हुआ अब मेरी नयी यात्रा प्रारम्भ हो रही थी .....

दुकान में एक टेबल और कुर्सी का इंतजाम भी कर लिया और एक बोर्ड भी लगवा लिया जिस पर लिखा था

ज्योतिषाचार्य महानंद चट्टोपाध्याय ।

रात को पिशाचिनी आई और अपना भोग लेकर चली गयी .....

मेरी दुकान चल निकली !

पिशाचिनी के प्रभाव से 15-20 लोग मेरे दुकान में रोज पहुंच जाते ।

कहां से आते ?

कैसे आते ?

यह तो वही जाने ।

लेकिन आ जाते थे और इस प्रकार से मेरा कार्यक्रम बढ़िया चल निकला रोज की आमदनी हजार रुपए के पार हो चली थी और कई बार उससे ज्यादा भी हो जाती थी ।

मैंने अपनी फीस बढ़ाकर 151 रुपए कर दी थी ।

शहर में मेरे नाम का काफी प्रचार प्रसार होने लगा था । लोगों को लगने लगा था कि एक सिद्ध ज्योतिषी उनके शहर में आ गया है ।

सच्चाई केवल मैं जानता था !

इस प्रकार के प्रचार से फायदा मुझे ही हो रहा था और नए-नए लोग अपना भविष्य जानने के लिए मेरे पास आ रहे थे ।

जैसे ही मैं उनको उनके भूतकाल की घटना बताता या उन्हें उनके नाम से पुकारता वह प्रभावित हो जाते ।

उसके बाद कुछ भी उलजुलूल बात भविष्य के बारे में शब्दों से खेल कर बता देता ।

उसके बाद किसी समस्या के बारे में बताने से उसका समाधान पूछते और मैं उसके विषय में भी अपने मन से कुछ भी बता देता था और वे उसे सच मान लेते थे.....

उनका भूतकाल मैंने पूरी तरह से प्रामाणिक रूप से बताया होता था तो वे यही समझते थे कि मुझे भविष्य की भी जानकारी है.....

केवल मैं जानता था कि मेरी गति पिशाचीनी की वजह से केवल भूतकाल में है और मैं भविष्य नहीं देख सकता था .....

लेकिन मेरा धंधा अच्छा चल रहा था और धीरे-धीरे में ज्योतिष के रूप में प्रतिष्ठित हो रहा था ।

एक हफ्ते के बाद एक गाड़ी आकर मेरे सामने रुकी..... एंबेसडर कार । उस समय अधिकतर सरकारी अधिकारियों के पास एंबेसडर कार हुआ करती थी तो मुझे थोड़ा सा डर भी लगा कि कुछ गड़बड़ तो नहीं है । गाड़ी में से रामदास अपनी पत्नी के साथ उतरा । रामदास सूट-बूट में था और उसके साथ थी उसकी पत्नी !

जो स्वर्ग से उतरी हुई अप्सरा की तरह लग रही थी !

गोरा रंग .....

कमानीदार भौ.....

कटीले नयन .....

पर्वत की तरफ बढ़े हुए स्तन मंडल .....

मुट्ठी में आ जाए ऐसी कमर .....

विस्तृत जघन क्षेत्र .....
घुंघराले काले बाल उसकी कमर तक बिखरे हुए थे .....
किसी अलसाई हुई नदी की तरह.....
जो पर्वत शिखर से बेफिक्री से नीचे की ओर बह रही हो .....
कुल मिलाकर ऐसा सौंदर्य जो लाखों में किसी एक को मिलता है । वास्तव में वह अप्सरा ही लग रही थी । जिसे देखकर किसी का भी मन डोल जाना स्वाभाविक था .....
दोनों धीरे-धीरे मेरी ओर आ रहे थे
रामदास के चेहरे पर विजयी मुस्कान थी लेकिन उसकी आंखों में जो पीड़ा थी.....
वह मैं महसूस कर सकता था ।
पत्नी के चेहरे पर शर्मिंदगी के भाव थे !

दोनों ने आकर मेरे चरण स्पर्श किए ।
आसपास की सारी दुकान के लोग मेरे प्रति सम्मान के भाव से भर चुके थे .....
क्योंकि मेरे यहां ग्राहकों की संख्या बढ़ गई थी ।

अब एक एंबेसडर कार में सूट बूट वाला आदमी पत्नी के साथ मेरे पांव छू रहा था ।

मेरा सीना गर्व से फूला हुआ था ।

दरअसल रामदास मुझे लेकर अपने घर ले जाना चाहता था ।

अब यह एक अलग स्थिति थी जिसके लिए मैं तैयार नहीं था ....

खैर....

मैं उसकी गाड़ी में बैठा और चल पड़ा ।

हम लोग जिस घर में पहुंचे वह एक आलीशान बंगला था ।

सामने में 4 गाड़ियां खड़ी हुई थी !

ऐश्वर्य हर तरफ बिखरा हुआ था !

मुझे एक आलीशान कमरे में बैठाया गया और नौकर मेरी सेवा में लग गए ।

शीशम की लकड़ी का बना हुआ फर्निचर रखा हुआ था जिसे देखने से ही पता चलता था कि वह काफी कीमती होगा । कांच के बने हुए फानूस लटक रहे थे । दीवाल पर बड़े-बड़े तेल चित्र लटके हुए थे जिसमें

से कुछ संभवतः रामदास के पूर्वजों के रहे होंगे । एक तरफ दोनाली बंदूक दीवार पर लटकी हुई थी । दूसरी तरफ चार तलवारें दो-दो के जोड़े में ढाल के साथ दीवार पर ही टंगी हुई थी । कुल मिलाकर साफ पता चल रहा था कि खानदानी रईस लोग हैं ।

पति पत्नी दोनों सामने बैठे हुए थे । मेरे सामने कई प्रकार का नाश्ता शर्बत सब कुछ रखा हुआ था । वह मुझसे उसे ग्रहण करने का अनुरोध कर रहे थे ।

मैंने नाश्ता करना चालू किया.....

तभी कुछ आदमी रामदास से मिलने आए और रामदास कमरे से निकल कर चले गए ।

उनके बाहर जाते ही उनकी पत्नी ने, जो दिखने में किसी अप्सरा से कम नहीं थी , नौकरों को बाहर भेज दिया और दरवाजा बंद करने के लिए कहा । वह शायद इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी ।

मैं थोड़ा सा भयभीत हो गया कि अब यह क्या होने जा रहा है ? पुरुष भले ही अपने आप को बहुत बहादुर दिखाता है लेकिन अंदर से वह भी कमजोर होता है । किसी एकांत कमरे में अगर कोई स्त्री किसी पुरुष को

पकड़ ले तो अच्छे-अच्छे पुरुषों की हालत खराब हो जाती है । बहुत सारे लोग तो वहां से भाग खड़े होते हैं .....

मेरे मन में यह संशय भी था कि जो स्त्री किसी के साथ भाग सकती है ....

वह कुछ भी कर सकती है.....

लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ ।

दरवाजा बंद होते ही वह मेरे पांव पकड़कर रोने लगी ।

यह मेरे लिए बड़ी अजीब सी स्थिति थी !

एक बंद कमरा !

जिसमें एक युवा और सुंदर स्त्री !!

मेरे पांव पकड़कर रो रही है !!!

मुझे समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूं ?

मैंने हाथ जोड़कर कहा - आप बताएं कि मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं ?

वह कहने लगी - आप ही है जो मुझे बचा सकते हैं ।

आपकी वजह से ही इन्होंने मेरी जान बख्श दी थी ।

आप कुछ ऐसा करिए कि ये वापस मुझे स्वीकार कर ले । आप जो चाहोगे मैं आपको दूंगी ....
इतना कहकर वह मादक अंदाज मे मुस्कुराई ।
उसके बाद अपनी साड़ी से सौ रुपये का एक बंडल निकाला और मुझे दे दिया ।

मैंने उसे अपने थैले के हवाले कर दिया और पूछा - आप भागी क्यों थी ?

उसने कहा - माधव मेरा विवाह के पहले का प्रेमी था और उसके बहलावे पर मैं उसके साथ भाग निकली थी । हम दोनों यहाँ से मुंबई भागने वाले थे । लेकिन अचानक ये पहुँच गए । इन्होंने माधव को इतना मारा है कि उसकी हड्डियां टूट गई है । उसको शायद उन्होने नदी मे फिकवा दिया है । मेरी भी बहुत पिटाई हुई है .... इन्हीं के मुंह से मैंने आपका नाम सुना इसलिए मैं आपसे प्रार्थना कर रही हूं कि कुछ ऐसा कीजिए कि मेरा गृहस्थ फिर से बस जाए ।

मैंने पूछा - आप दोबारा से किसी के साथ भाग जाने का तो नहीं सोचेंगी ।

श्यामला - यह इकलौता अनुभव मेरे लिए काफी है । मैं इसके बाद ऐसा कुछ करने के बारे में सोचूंगी भी नहीं ।

मैंने कहा - ठीक है । मैं कोशिश करूंगा ।

श्यामला ने आवाज लगाई और दरवाजा खुल गया । थोड़ी देर बाद रामदास भी वापस आ गए.....

उनकी आंखों में श्यामला के प्रति घृणा दिख रही थी । उनके आते ही श्यामला उठ कर खड़ी हो गई । रामदास ने उसे वहां से जाने का इशारा किया । श्यामला बाहर चली गई ।

रामदास ने दरवाजा बंद करने का इशारा किया । नौकर ने दरवाजा बंद कर दिया अब हम दोनों उस कमरे में अकेले थे ।

रामदास ने अपनी जेब से सौ सौ की दो गड्डियाँ निकाली और मेरे सामने रख दी और हाथ जोड़कर बोला - आपने मेरी इज्जत बचा ली । इस कुतिया को तो मैं वहीं पर मार डालता.....

लेकिन आपको वचन दिया था .....
इसलिए इसे छोड़ दिया ।
उस हरामी को तो मैंने उसके किए की सजा दे दी है
लेकिन अब इसे मैं अपने पास नहीं रखना चाहता और
सोच रहा हूं कि इसे घर से निकाल दूँ ।
आपने उसके साथ मेरा भाग्य जुड़े होने की बात कही
थी इसलिए मैं आपसे सलाह लिए बिना इसे नहीं
निकालना चाहता हूं ।
बताइए मैं क्या करूं ?

मेरे मन में दुविधा चलने लगी ।
स्त्री चरित्रहीन है यह तो मुझे पता चल चुका था लेकिन
वह सुधरना चाहती थी.....
मैंने सोचा कि पता किया जाए कि यह रामदास कितना
दूध का धुला है ।
मैंने आंखें बंद की और पिशाचीनी का ध्यान किया तो
मुझे पता चल गया कि रामदास चरित्रवान है लेकिन
संतान उत्पन्न करने में असमर्थ है । वह यह बात जानता
भी है ।

पिशाचीनी ने यह भी बता दिया कि श्यामला गर्भवती है । केवल दस दिन हुआ है इसलिए उसे भी इसका आभास नहीं है .....

मुझे अपना पॉइंट मिल चुका था ।
एक गर्भवती महिला को घर से निकालना तो गलत होता । संतान उत्पन्न करने में अक्षम व्यक्ति की गर्भवती पत्नी को निकालना तो और भी गलत होता तो मैंने सोचा कि इस अवसर का भी लाभ लिया जा सकता है ।

मैंने मुद्रा बनाई .....
आसमान की तरफ देखा !
हाथ इधर उधर घुमाया ....
और फिर कमरे में उठकर इधर-उधर टहलने लगा ।
थोड़ी देर बाद आकर अपने आसन पर बैठ गया । मैंने पद्मासन लगाया....
आंखें बंद की.....
और जोर का अट्टहास किया .....
मेरे इस अस्वाभाविक कृत्य से रामदास भी घबरा गया।

अजीब सी हरकत करने वाले लोगों को हम भय की दृष्टि से देखते हैं.....
लेकिन अगर वह बाबा हो तो हमें यह आभास होने लगता है कि यह जरूर सिद्ध पुरुष है ।
उसे मैं यही आभास देने की कोशिश कर रहा था ।

मैंने आंखें खोली और उसे कहा - रामदास ! तू वास्तविकता को स्वीकार कर ले । तू भी जानता है कि तू संतान उत्पन्न करने में असमर्थ है ।

मेरी बात सुनते ही रामदास मेरे पांव पकड़कर बोला - भगवन ! इसका कुछ उपाय बता दो ! यह सब कुछ जो मैंने कमाया है वह किस को देकर जाऊंगा ।

मैंने फिर से आंखें बंद किया और कहा - उपाय तो हो सकता है लेकिन आज ही करना पड़ेगा । मैंने शरबत का ग्लास उठाया उसे अपनी दोनों हथेलियों के बीच में रखा और बुदबुदाने लगा.....
रामदास उम्मीद के साथ देखता हुआ मेरे चरणों में बैठा था !

मेरे अहं को संतुष्टि मिल रही थी !
मुझे अपने बहुत कुछ होने का आभास हो रहा था !

मैं समझ गया कि मैंने सही प्रक्रिया और चाल चल दी है और पिशाचिनी सिद्धि के माध्यम से मैं अथाह धन संपत्ति इकट्ठा कर सकता हूं ....
मेरे झोले में अभी तीस हजार पड़े हुए थे ।

मैंने मंत्र पढ़कर वह शरबत उसे पिला दिया । वह पूरी श्रद्धा के साथ उस शरबत को पी गया ।

फिर मैंने उसका हाथ देखा !
मस्तक देखा .....
और प्रश्न किया - क्या तुम्हारे लिंग पर तिल है ?
वह चौंक गया .....
बोला - महाराज ! आप तो अंतर्यामी हैं ! आपको कैसे पता लगा ..... तीन है महाराज ..... तीन तिल है !!
वह आश्चर्यचकित होता हुआ बोला ।
मैंने यह तुर्रा यूं ही छोड़ दिया था .....

क्योंकि मुझे यह पता था कि लगभग 60-70% पुरुषों के लिंग पर तिल होता है और मेरा तुर्रा निशाने पर लग गया था ।

रामदास के चेहरे पर श्रद्धा के भाव उभरे हुए थे । वह मुझे किसी सिद्ध पुरुष की निगाह से देख रहा था । यह सब कुछ मेरे मन को संतुष्टि प्रदान कर रहा था । मुझे लग रहा था कि मैं वास्तव में अब अपने पिता के नाम को रोशन करने वाला ज्योतिषी बन गया हूं ....

यह एहसास काफी सुखद था ।

आप स्वयं कल्पना करें.....

एक नालायक बेटा !

जिसे अपने पिता के ज्ञान का अंश मात्र भी प्राप्त नहीं हुआ है !

वह अपने पिता का नाम रोशन करने लायक स्थिति प्राप्त कर ले .....

तो.....

उसकी खुशी की क्या सीमा होगी ।

मैं भी उसी स्थिति में था !

अपने आप को भाग्यशाली मान रहा था कि मुझे यह साधना प्राप्त हुई और काला बाबा की कृपा से मैं इसे पूरा कर पाया ।
खैर ....

मैंने उंगलियों पर कुछ गणना की !
अपने पास में रखी हुई कॉपी पर कुछ अंक लिखे ।
और माथे पर हाथ रखकर कुछ सोचने लगा .....

यह सब करने का उद्देश्य रामदास को प्रभावित करना था ।
इसका वास्तविक गणना या फल से कोई लेना देना नहीं था क्योंकि वह तो मुझे अच्छे से आता भी नहीं था ।
वैसे भी मुझे वह जानकारी बतानी थी जो मैं पहले से जानता था .....
उसके आधार पर कुछ ऐसा बताना था जो रामदास को प्रभावित कर सके .....
उसको यह एहसास दिला सके की संतान की प्राप्ति उसे मेरे द्वारा बताए गए उपाय की वजह से हुई है ।

मैंने उससे कहा - आज रात आठ बजकर अड़तालीस मिनट के बाद से प्रारम्भ करके अगले तीन रात तक तुझसे जितनी बार हो सके उतनी बार पत्नी के साथ संसर्ग कर लेना । महीने भर के अंदर तुझे खुशखबरी मिल जाएगी ।

सावधान ! संतान होने से पहले भूलकर भी यह बात किसी को नहीं बताना .....

अपनी पत्नी को भी नहीं .....

वरना मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा ।

वह कान पकड़ कर बोला - आप निश्चिंत रहो महाराज ! मेरे अलावा यह बात किसी दूसरे के पास तक नहीं जाएगी ।

वह फिर से चरणों मे दंडवत लेट गया । उसे इतनी जल्दी परिणाम मिलने की उम्मीद नहीं थी । मेरी बात पर उसे इतना विश्वास था जितना पत्थर पर लिखी हुई लकीर का होता है ।

इधर पिशाचिनी के माध्यम से मै तो पहले ही जानता था कि उसकी पत्नी गर्भवती हो चुकी है .....

यानी मामला सही जा रहा था और बालक या बालिका के जन्म के बाद निश्चित रूप से रामदास एक अच्छी रकम मुझे दान करने वाला था .....
यह सोच मैं मन ही मन मुस्कुराया .....

मैंने कहा - पत्नी को बुला । उसे भी अभिमंत्रित जल पिला देता हूं जिससे इसका प्रभाव बढ़ जाएगा । थोड़ी देर बाहर ही रहना ।

रामदास ने दौड़ कर दरवाजा खोला ।
कुछ दूरी पर श्यामला घबराई हुई खड़ी थी क्योंकि उसे भी नहीं मालूम था कि क्या होने वाला है ।
रामदास के चेहरे की खुशी देख वह अचंभित थी ....

रामदास ने उसे अंदर आने का इशारा किया ....
वह अंदर आ गई ।
बाहर निकलकर रामदास ने बाहर से दरवाजा बंद कर दिया ।
श्यामला मेरे पास आई मैंने शरबत लेकर मंत्र जाप करके उसे पिला दिया .....

वह अपना पति और परिवार वापस प्राप्त करना चाहती थी । उसकी व्यवस्था मैंने कर दी थी !

लेकिन.....

यह बात मेरी समझ में आ गई थी कि धन की दोनों के पास कोई कमी नहीं है और वहां से और भी धन निकाला जा सकता है !

तो मैंने कहा - मुझे कुछ अनुष्ठान करना पड़ेगा ताकि तुम्हारा पति तुम्हारी तरफ आकर्षित हो । इसमें थोड़ा खर्चा आएगा ।

वह तुरंत तैयार हो गयी ,.....

बोली - आप चिंता मत करो जो भी खर्चा होगा मैं देने को तैयार हूं ।

मैंने बात को और प्रभावशाली बनाने के लिए कहा - अभी नहीं लूंगा ! जब तुम्हारा पति तुम्हारी तरफ आकर्षित हो गया .... ऐसा तुमको यकीन हो जाए..... तब तुम मेरी दुकान पर आकर अनुष्ठान का खर्च इक्कीस हजार दे देना । पूजन सामग्री का खर्च तो तुमने दे ही दिया है .....

यह बात सुनकर उसका मेरे ऊपर विश्वास और बढ़ गया ।

उसने हाथ जोड़कर मेरा आभार व्यक्त किया ।

मैंने उसे हिदायत दी - आज शाम को मैं अनुष्ठान प्रारंभ करूंगा जिसके साथ वह तुम्हारी ओर आकर्षित होने लगेगा .....

मेरा यह अनुष्ठान 3 दिन तक चलेगा ।

मेरे अनुष्ठान की वजह से वह तुम्हारे तरफ खिंचा आएगा ।

वह तुम्हारा साथ चाहेगा ।

इन तीन दिनों के अंदर जितनी बार हो सके.....

और जितनी बार रामदास चाहे.....

उसका सहयोग करना.....

महादेव की कृपा से साल भर मे तुम्हारे आँगन मे नन्हें पाँव घूमेंगे .....

यह सुनकर वह खुशी से पागल हो गई ।

कहां तो वह घर से निकाले जाने के डर से भयभीत थी और कहां संतानवती होने जा रही थी ।

उसने मेरे पांव कसकर पकड़ लिए मैंने बड़ी मुश्किल से उसे छुड़ाया ।
और अपना झोला लेकर निकल गया ।

पिशाचिनी को आए दस पंद्रह दिन बीत चुके थे .....
एक दिन अचानक जब मैं रात्री को अपने कमरे में लेटा हुआ था .....
पिशाचीनी प्रकट हुई ।
मैं समझ गया यह किस लिए आई है.....
मैं तुरंत निर्वस्त्र होकर लेट गया ।
यह देखकर वह बहुत प्रसन्न हुई और उसने मेरा भरपूर भोग किया और चली गई.....
मैं इतना थक चुका था कि उठकर कपड़े पहनने की स्थिति में भी नही था और उसी प्रकार दो-तीन घंटे पडा रहा .....
बड़ी मुश्किल से एक गमछा अपने ऊपर डाल दिया और सो गया .....
अगले दिन भी पूरा शरीर दर्द कर रहा था ....
अगर स्पष्ट कहूँ तो मुझे बलात्कार पीड़ित जैसी अनुभूति होती थी .....

उसका भोग का तरीका भी पैशाचिक था .....
उसके जाने के बाद मेरे शरीर पर नोचने के निशान मौजूद रहते थे ....
जिनसे टीस उठती रहती !
यह एक ऐसी कीमत थी जो मुझे हर दस पंद्रह दिन मे चुकानी होती थी ।
मुझे यह सस्ता सौदा लग रहा था....
लेकिन मैं नहीं जानता था कि यह वास्तव मे कितने घाटे का सौदा था !
खैर .....

मेरा मकान मालिक लगभग 65 साल का बुजुर्ग था और उसकी पत्नी लगभग 35 वर्ष की महिला थी । उसने मेरे खाने की ज़िम्मेदारी भी ले ली थी । जिसके बदले मे मैंने 1000 रुपये उनको देने की बात कर ली थी । इससे दोनों को फायदा था ....
मुझे खाना नहीं बनाना पडता और उनको थोड़ी अतिरिक्त आय हो जाती ....

मेरा ज्योतिष का काम चल निकला था ।

कोई ना कोई ऐसा आ ही जाता जिसकी वजह से मुझे पर्याप्त धन की प्राप्ति हो जाती ।

एक दिन यूं ही आराम कर रहा था तभी मकान मालिक की पत्नी शीतल खाना लेकर आई । सुबह से लेकर शाम तक लोगों का आना जाना लगा रहता था ..... इसलिए भोजन करने का समय कम मिलता था ।

जब वह मुझे भोजन करने के लिए बुलाती थी तब मैं झटपट भोजन करके वापस फिर अपनी गद्दी पर आ बैठता था..... ताकि कोई यजमान गलती से छूट ना जाए ।

उस दिन कोई नहीं था .... इसलिए मैं आराम से भोजन कर रहा था ।

काफी दिनों के बाद ऐसा मौका लगा था जब मैं आराम से बैठकर भोजन कर पा रहा था ।

मैं भोजन कर रहा था और वह ताजी रोटियां बना कर ला रही थी ।

गोल गोल गरम गरम फूली हुई रोटियां अगर आपको मिले तो मजा आ जाता है.....

मैं वैसे ही रोटियों का आनंद ले रहा था ।

शीतल बहुत अच्छा भोजन बनाती थी । सादा और सुस्वादु .....

जब मेरा भोजन हो गया तब वह थाली उठाने लगी और बोली - मुझे आपसे कुछ बात करनी है ।

मैं खाली था मैंने कहा - बोलिए ।

शीतल - मैं आपसे कुछ जानना चाहती हूं लेकिन मेरे पास आपकी दक्षिणा के लिए पैसे नहीं है ।

मैंने कहा - आपके लिए दक्षिणा की क्या बात है आप पूछिए क्या जानना चाहती हैं ?

शीतल - मैं बर्तन रखकर आती हूँ ।

यह कह कर वह चली गई और लगभग 10 मिनट के बाद वापस लौटी ।

शीतल सलीकेदार औरत थी । बेहद संतुलित व्यवहार वाली और वेशभूषा में पूरी मर्यादा का पालन करने वाली महिला..... जिसे देखकर अपने आप आदर का भाव पैदा हो जाता है और उसे भी मैं सम्मान की दृष्टि से देखता था ।

शीतल मध्यम आयु की महिला थी । उसका रंग सांवला था । वह काफी दुबली पतली महिला थी ।

अधिकतर समय वह सलवार कुर्ता पहनती थी जैसा कि आमतौर पर पंजाब हरियाणा की महिलाएं पहनती है । मुझे वहां पर आए हुए लगभग 15-20 दिन हो चुके थे और इस दौरान मुझे उनके घर में कोई आता जाता दिखाई नहीं दिया था । मेरा कार्य ऐसा था कि मैं पूरी तरह उसी में व्यस्त रहता था । इसलिए इस तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी । मैंने इसे भी एक सामान्य घटना की तरह ही समझा था ..... लेकिन उसके पीछे भी एक कहानी थी जो आगे आने वाली थी ।

मैं बिस्तर पर बैठा हुआ था । जब वह आई तो मैंने उसे पास में रखी हुई कुर्सी पर बैठने का अनुरोध किया और वह उसमें बैठ गई ।

उसके कुर्सी में बैठते ही पिशाचिनी की आवाज मेरे कानों में फुसफुसाहट की तरह आने लगी । वह बोली -

सेठ गुजरमल की यह दूसरी पत्नी है । पहली पत्नी और उसका जवान बेटा दोनों एक दुर्घटना मे मारे गए थे । उसके बाद गुजरमल की मानसिक स्थिति काफी दिनों तक खराब रही । उसके परिवार वालों ने गरीब घर की लड़की शीतल को ढूंढ कर उसकी दूसरी शादी करा दी

। दोनों के बीच नहीं के बराबर संबंध हैं और इसे संतान की इच्छा है ।

मैंने मन में प्रश्न किया - क्या इसे संतान होगी ?

कोई उत्तर नहीं आया .....
कर्ण पिशाचिनी की गति केवल भूतकाल में होती है और वह भविष्य का कोई भी तथ्य बता नहीं पाती ।
संभवतः इसीलिए वह मौन हो गई थी....
यह मेरे लिए गंभीर धर्म संकट की स्थिति थी ....
उस महिला को मैंने आश्वासन दे दिया था और अब मेरी स्थिति यह थी कि मैं उसे कुछ भी बताने की स्थिति में नहीं था ।

लेकिन मुझे उसे कुछ न कुछ तो बताना ही था ।

कुर्सी पर बैठकर उसने मेरी तरफ प्रश्नवाचक निगाहों से देखा .....
जैसे कहना चाहती हो कि - क्या मैं पूछूं ?

उसकी आंखों में संकोच का भाव नजर आ रहा था .....

यह स्वाभाविक भी था !

आखिर मुझे वहां आए हुए मुश्किल से 10-12 दिन हुए थे । भोजन के समय की मुलाकात के अलावा हमारा कोई विशेष परिचय नहीं था ।

एक दूसरे व्यक्ति विशेष रूप से पुरुष के सामने अपनी समस्या को बोलने में हर महिला सकुचाती है !

उसके साथ भी यही हो रहा था.....

मैंने उसे चुप रहने का इशारा किया ! अपना मेग्नीफ़ाइंग ग्लास निकाला .....

और उसे हाथ दिखाने के लिए कहा ....

जैसा कि मैंने कहा था बिना कुछ देखे अगर कहा जाए तो उसका प्रभाव कम पड़ता है ....

इसलिए मैं कोशिश करता था कि या तो कुंडली देखकर या हाथ देखकर कुछ बताने का प्रयास करूँ !

इस बार भी मैं वही करने वाला था ।

उसने अभी तक कुछ नहीं पूछा था .....

हाथ देखने के बाद मैंने गंभीरता का आवरण ओढ़ते हुए कहा - आप संतान को लेकर चिंतित हैं ?

उसके अविश्वास भरे चेहरे पर अचानक विश्वास और आशा की किरण दिखाई देने लगी ।

यह देख कर मुझे अच्छा तो लगा .....
लेकिन मन के किसी कोने में कहीं यह भय भी था कि मैं इसके लिए कोई उपाय बता नहीं सकता मैं क्या करूं ? इसका जवाब पिशाचिनी भी नहीं दे सकती थी क्योंकि यह उसके सामर्थ्य से बाहर की बात थी ।

ज्यादा पूजा पाठ करने के लिए मैं उसे बोल नहीं सकता था, क्योंकि वैसी स्थिति में पिशाचीनी को उस घर में रहने में दिक्कत हो सकती थी और मेरा ज्योतिष का जमा जमाया कारोबार ठप हो सकता था ।
मैंने आंखें बंद कर ली और ध्यान मुद्रा में बैठ गया जैसे कोई बहुत गंभीर ध्यान कर रहा हूं .....
लेकिन मेरे मन में यही उथल पुथल चल रही थी कि आखिर इस महिला को ऐसा क्या जवाब दूं जिससे यह संतुष्ट हो सके !
मुझे कुछ न कुछ ऐसा बताना था ताकि वह खुश हो जाए । मैंने कहा - आपके हाथ की रेखाओं के हिसाब से 6 महीने के बाद आपके संतान होने का योग बनता है ।
यह सुनकर वह अत्यंत प्रसन्न हो गई ।

मैं जानता था कि ऐसा कुछ होने वाला है यह निश्चित नहीं है .....

लेकिन ....

ऐसा कह देने से मुझे 6 महीने का समय मिल जाता और उस बीच मैं अपना कोई और इंतजाम कर लेता या किसी दूसरी किराए की दुकान में शिफ्ट हो जाता ..... ऐसा सोच कर मैंने यह पुड़िया छोड़ी थी ।

दो जमा दो चार होते हैं .....

उसी प्रकार से लोगों को देखते देखते यह समझ आ जाती है कि अगर ऐसा होगा तो जरूर ऐसा होगा ।

पति की उम्र काफी ज्यादा थी ..... तो स्वाभाविक रूप से पत्नी के साथ संबंधों में कमी आती है । बिना संबंधों के संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती यह एक अकाट्य सत्य है ।

इसलिए मैंने उसे कहा - आप अपने पति को दूध के साथ शिलाजीत मिला कर दिया करिए इससे आपको संतान प्राप्ति में सहायता मिलेगी ।

शिलाजीत के विषय में संभवतः आप भी जानते होंगे । यह शिला अर्थात पत्थरों के बीच से निकला हुआ रस माना जाता है जो पुरुष में पुरुषत्व की कमी की पूर्ति करता है । यह औषधि वास्तव में शरीर की समस्त नस नाड़ियों को शक्ति प्रदान करती है । पुरुष का अंग भी इन्ही नाड़ियों के द्वारा ही संचालित होता है । इसलिए नाड़ियों में शक्ति प्राप्त होते ही उसकी कार्य क्षमता में भी सुधार होने लगता है । इसलिए अधिकांश वाजीकरण औषधि में शिलाजीत का उपयोग किया जाता है ।

इसी सामान्य जानकारी का उपयोग करते हुए मैंने उसे यह सलाह दी थी ।

ज्योतिषी वही ज्यादा प्रसिद्ध और सफल होता है जो अपने यजमान की इच्छा के अनुसार उसका भविष्य फल बताता है .....

उदाहरण के लिए अगर कोई व्यापारी किसी ज्योतिषी के पास जाए तो उसकी इच्छा होगी कि ज्योतिषी उसके व्यापार में वृद्धि की बात बताए । वह ऐसा कुछ बताता

है तो उस ज्योतिषी के प्रति उसकी श्रद्धा बढ़ जाती है ....

और वह उसे अच्छा ज्योतिषी मानने लगता है ।

मैंने इसी फार्मूले का उपयोग किया था ।

वह प्रसन्न हो कर चली गई ।

मुझे लगा कि 6 महीने के लिए मामला आगे बढ़ गया है अब मुझे कुछ दिनों तक इससे कोई परेशानी नहीं होगी । लेकिन मैं गलत था .....

धीरे धीरे उसका मेरे यहां आना बढ़ता गया !

अब वह मुझसे मेरी पसंद पूछ कर खाना बनाया करती .....

कई बार खाने के साथ कोई मिठाई या हलवा जैसी चीज भी बना कर ले आती ।

शुरु मे मुझे लगा कि यह संभवत: मेरे द्वारा बताए गए भविष्यफल के एवज में वह कर रही होगी इसलिए मैं भी उसे सहजता से ग्रहण करता रहा । मेरा काम बढ़िया चल रहा था .....

धीरे धीरे हम दोनों की बातचीत होने लगी मेरे सामने दिन भर समस्या ग्रस्त लोग ही आते थे । उनकी बातें सुनकर मेरा दिमाग भी खराब हो जाता था ....
ऐसे में शीतल के साथ बातचीत करने से मन हल्का हो जाता था ।

एक खास बात यह थी कि जिस दिन पिशाचिनी का आगमन होने वाला होता था उसके पहले दिन मेरी भूख बढ़ जाती थी । भूख बेहद असामान्य रूप से बढ़ती थी ।
यह क्यों बढ़ती थी ?
यह तो मुझे भी नहीं पता .....
सामान्य रूप से मैं छह रोटियाँ खाता था तो पिशाचिनी के आगमन के पहले दिन कम से कम 20 रोटियां खाता ।
दस पंद्रह दिन में एक आध दिन ही ऐसा होता था ।
उसके लिए मैं दिन मे होटल जाकर भोजन कर लेता और दो तीन लोगों का खाना खा लेता तब तृप्त होता ।
पिशाचिनी के आगमन का समय हो चला था और मैं लोग ज्यादा होने की वजह से होटल नहीं जा पाया ।

जब भोजन करने बैठा तब मुझे भयंकर भूख लग रही थी ।

शीतल खाना बना कर ले आई सामान तौर पर जैसा मैं खाता था वैसे ही पहले वह सब्जी लेकर आई और फिर गरम-गरम रोटियां सेक कर लाने लगी और मैं खाने लगा .....

मैं छह रोटियां खा चुका था .....

शीतल को लगा कि यह आखरी रोटी होगी .....

लेकिन मेरी भूख तो अभी शांत नहीं हुई थी ।

मेरे हाव भाव देख कर उसे समझ आ गया ।

वह फिर से आटा सानने चली गई.....

क्योंकि उसका आटा खत्म हो चुका था ।

उसने आटा साना और फिर से रोटियां बनाना प्रारंभ कर दिया !

उस दिन मैंने 23 रोटी खाई तब जाकर मुझे शांति महसूस हुई ।

खाना खाकर हाथ धोने के बाद में बिस्तर पर लेटने जा रहा था तभी वह फिर से मेरे कमरे में आई ।

शीतल ने पूछा - महाराज ! रोज 6 रोटियां खाते हो फिर आज इतनी सारी रोटियाँ कैसे खा गए ।

फिर हँसकर बोली - इसमें जरूर कोई राज है । मुझे भी बताओ ।
मैंने मन ही मन सोचा - राज तो है ! लेकिन अगर तुझे बता दिया तो मेरा राम नाम सत्य होना तय है ।

मुझे कुछ ना कुछ जवाब तो देना ही था और ऐसा देना था जिससे वह संतुष्ट हो । तो मैंने कहा मैं जो ज्योतिष का कार्य करता हूं उसमें एक देवी की कृपा से ही सब पता चलता है ।
जब उसकी सवारी मुझ पर आती है तो मुझे इसी प्रकार से भूख लगती है ।

मेरी बात सुनकर उसे आश्चर्य हुआ !
लेकिन उसका संदेह दूर हो गया और मैंने राहत की सांस ली.....

फिर काफी इधर उधर की बात करने के बाद वह अपने कमरे में चली गई और मैंने भी दरवाजा बंद करके अपना बिस्तर पकड़ लिया ।

आधी रात को पिशाचिनी का आगमन हुआ और उसने अपना घनघोर भोग प्रारंभ कर दिया ।

मैं तो उसके लिए तैयार था । रात भर उसका कार्यक्रम चला और सुबह करीब तीन बजे के आसपास वह जाने लगी और फिर थोड़ा रुक कर बोली - तुझे याद है ना मेरी शर्त ।

मैंने कहा - हां याद है । जब भी आपकी इच्छा होगी तब मुझे आपको भोग प्रदान करना है ।

पिशाचिनी बोली - वह तो ठीक है ..... लेकिन मेरे अलावा किसी स्त्री को भोगने के विषय में सोचना भी मत ।

वरना .....

इतना कहकर उसने क्रोध भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा ....

उसकी आंखों से अंगारे से निकल रहे थे !

वह गुर्राई - मुझसे बुरा कोई नहीं होगा ।

फिर वह चली गई ।

मैं स्तब्ध पड़ा रहा !

पिशाचिनी के भोग के बाद मेरी हालत पस्त हो जाती थी ।

ऐसा लगता था कि शरीर में जान ही नहीं रही हो ।

शरीर पीला पड़ जाता था किसी पीलिया के मरीज की तरह ।

ऐसा लगता था जैसे वह भोग करते समय शरीर का खून भी खींच लेती थी ।

वह अनुभव अत्यंत पीड़ादायक होता था ।

मुझे अपनी स्थिति को बरकरार रखने के लिए हर 10-15 दिन में उस पीड़ा को सहन करना ही था । मेरे पास कोई दूसरा उपाय नहीं था ।

लेकिन मेरा शरीर धीरे धीरे सूख रहा था ....

शीतल का आना उसी प्रकार से जारी रहा और हम दोनों के बीच बातचीत भी होती रही । मकान मालिक गूजरमल से भी बातचीत हो जाती । एक दिन शाम को उसने मुझे पिलाई । बातचीत के दौरान उसने यह भी

बताया कि शीतल ने उसे 6 महीने के बाद संतान की संभावना के विषय में बताया है ।
वह अत्यंत प्रसन्न था ।
उसकी नजरों में भी मेरा सम्मान बढ़ चुका था।
अक्सर अब हमारी महफ़िल शाम को जमती !
धीरे धीरे दिल की बातें भी खुलने लगी ।

उसने एक शाम अपने उम्र अधिक हो जाने की वजह से पौरुष में कमी का उपाय जानने का प्रयास किया । थोड़ा बहुत आयुर्वेदिक औषधियों का मुझे ज्ञान था । शिलाजीत वाली दवाई मैं शीतल को पहले ही बता चुका था । शिलाजीत का असर लगातार सेवन करने से 15-20 दिन में दिखने लगता है । लगभग 10 दिन तो हो चुके थे । मैंने उसके विश्वास को पुख्ता करने के लिए एक जड़ी भी उसे दी और उसे शुक्रवार के दिन कमर में बांध लेने के लिए कहा । साथ ही यह भी कहा कि इससे उसकी क्षमता बढ़ जाएगी । गूजरमल भी प्रसन्न हुआ ।

इसके लगभग 8-10 दिन के बाद शीतल अत्यंत प्रसन्नता के साथ मेरे पास आई और बोली - आपके

बताए अनुसार मैंने दूध में शिलाजीत मिला कर देना प्रारंभ कर दिया है और उसका असर दिखने लगा है कल रात को.....

इन्होंने.....

इतना बोल कर वह शर्माने लगी !

मैं उसकी बात समझ गया , मैं भी मुस्कुरा दिया ।

गूजरमल पत्नी और पुत्र के खो जाने के बाद बेहद निराश जीवन व्यतीत कर रहा था । संतान की प्राप्ति के विषय में सुनकर उसके जीवन में फिर से उत्साह पैदा हो गया । इसका पता मुझे तब चला जब अगले दिन उसके दुकान मे साफ सफाई चालू हो गई ।

उसकी सेनेटरी और पाइप की दुकान कई सालों से बिना पोताई के पड़ी हुई थी । हर तरफ सीलन और दाग धब्बे लगे हुए थे । गुजरमल को इन सब से कोई मतलब नहीं था इसलिए वे वैसे के वैसे पड़े थे ।

यह स्थिति आपने कई बुजुर्ग लोगों के साथ भी देखी होगी , जिनके बच्चे उनसे दूर हो गए हैं ....

नौकरी की वजह से या किसी और वजह से .....

वे उनके साथ नहीं रह पा रहे हों तो ,

उन बुजुर्गों का आर्थिक कारणों से कहिए.....
या मानसिक कारणों से कहिए.....
घर के रखरखाव के प्रति लगाव कम हो जाता है ।

जो घर हर दूसरे साल पोताई किया जाता था वह कई कई साल तक वैसा ही पड़ा रहता है.....
कुछ ऐसी ही स्थिति गुजरमल के साथ भी थी ।

आजू बाजू के दुकानदार भी आश्चर्यचकित थे कि गुजरमल को अचानक क्या हो गया है और वह अपने दुकान की पुताई क्यों करवा रहा है ।

उसने अपने दुकान और मकान की पुताई तो करवाई ही साथ में मेरे दुकान और मकान की भी पुताई दोबारा से करवा दी ।
हमारे मकान ऐसे बने हुए थे कि सामने के हिस्से में दुकान था और पीछे के हिस्से में मकान था । दोनों आपस मे मकान वाले हिस्से से यानि पीछे से जुड़े हुए थे ।

मेरी ज्योतिष का कार्य मैं भी रविवार को बंद रखता था और वह मेरे आराम का दिन होता था ।
रविवार को गूजरमल की दुकान भी बंद रहती थी इसलिए गुजरमल शनिवार शाम को दुकान बंद कर देता और गांव में अपने खेतों की देखभाल करने के लिए जाया करता था । उसके बाद रविवार की देर रात को या फिर सोमवार को सुबह वापस आ जाता ।

यह उसका सामान्य नियम था ।
समय आगे बढ़ता गया .....
धीरे-धीरे पिशाचीनी के दोबारा से आने का समय हो गया ।
वह एक शनिवार था , जब मुझे असामान्य भूख लगने लगी ।
शाम को मैं अपने मित्र डोम के साथ चुपचाप होटल जाकर दस बारह रोटियाँ खाकर आ गया । इधर शाम को गूजरमल दुकान बंद करके गाँव चला गया ।
घर आने के बाद मैं स्नान करने के बाद कपड़े बदल रहा था जब दरवाजे पर आहट हुई ..... कपड़े पहन मैंने दरवाजा खोल तो शीतल खाने की थाली के साथ खड़ी

हुई थी । मैंने 10-12 रोटियां खा तो ली थी लेकिन भूख अभी भी लग रही थी इसलिए भोजन की थाली को देखकर मुझे बड़ा आनंद आया....
मैं खाने बैठ गया और लगभग 15-16 रोटियाँ कहा गया । शीतल देवी की सवारी समझ के अत्यंत श्रद्धा के साथ रोटी बना बना कर ला रही थी और मैं पूरे आनंद के साथ उसको खा रहा था ।

भोजन पूरा होने के बाद हाथ पैर धो कर बिस्तर की ओर बढ़ गया और जूठी थाली लेकर शीतल भी अपने घर चली गई ।

मुझे पता था कि रात को पिशाचिनी आने वाली है इसलिए मैं उसकी प्रतीक्षा करता हुआ लेटा था .....
आधी रात के बाद उसका आगमन हुआ और फिर वही पीड़ादायक भोग संपन्न होने के बाद वह वहां से लुप्त हो गई .....
मैं उसी प्रकार निर्वस्त्र पड़ा हुआ था क्योंकि उठकर कपड़ा पहन लेने की हिम्मत भी मुझ में नहीं थी और ना ही मेरे शरीर में उसकी ताकत थी । छह बजे के आसपास दरवाजा खटखटाने की आवाज आई ।

लेकिन मेरी हालत ऐसी नहीं थी कि मैं उठकर दरवाजा खोल सकूं इसलिए सुनकर भी मैं वैसे ही पड़ा रहा ।

मेरी हालत इतनी खराब थी कि उठने की बात तो दूर मेरी आंखें तक नहीं खुल रही थी ।

मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मेरे कमरे के दरवाजे तक आया और वापस चला गया .....

मैं वैसे ही पड़ा रहा !

फिर मेरी नींद लग गयी ।

रविवार का दिन था इसलिए उठने की चिंता भी नहीं थी । दोपहर एक बजे के आसपास मेरी नींद खुली । मैंने अपने आप को देखा !

शरीर पर मसलने कुचलने के निशान मौजूद थे !

अब थोड़ी सी ताकत महसूस हो रही थी ।

नित्य कर्म से निपटने के बाद स्नानादि करके जब वापस अपने कमरे में पहुंचा तो शीतल वहां मौजूद थी ।

मुझे संकोच हो रहा था !

उसके चेहरे पर कुटिल मुस्कुराहट मौजूद थी ।

यानी उसने मुझे उस अवस्था में देख लिया था । इस बात से मुझे और संकोच होने लगा ।

उसने मुझसे पूछा - महाराज खाना लाऊं ?

मैंने कहा - जी ले आइये ।

थोड़ी देर में वह भोजन लेकर आ गई । मैंने डटकर भोजन किया इस दौरान इधर-उधर की बातें चलती रही । मैं थोड़ी देर और सोना चाहता था इसलिए मैंने उसे कहा कि मैं सोना चाहता हूं ।

उसने कहा - ठीक है ! कमजोरी सोने से ही दूर होती है । इतना कहकर वह मुसकुराती हुई वहाँ से चली गई ।

मैं वापस बिस्तर पर पसर गया ।

बिस्तर पर पड़े पड़े ही शाम हो गई । उठने की इच्छा नहीं हो रही थी इसलिए भी वैसा ही पड़ता तभी शीतल आई और उसने पूछा चाय पिएंगे मैंने सहमति में सिर हिलाया थोड़ी देर में खाली चाय लेकर आ गई ।

उसने मुझसे कहा - आप शादी कर लीजिए ।

मैं - मेरी शादी करने की इच्छा नहीं है ।

शीतल - आपका काम भी अच्छा चल रहा है और युवावस्था भी है । ऐसे में शरीर की जरूरतें भी होती है । इसलिए शादी कर लेनी चाहिए ।

मैं - मुझे शादी प्रपंच जैसी लगती है और मैं उसमें फंसना नहीं चाहता ।

अब मैं उसे कैसे बताता कि पिशाचिनी की वजह से मैं शादी नहीं कर सकता था क्योंकि उसने इस विषय में मुझे पहले ही सचेत कर दिया था ।
बात आई गई हो गयी ।

रात का भोजन लेकर जब वह आई तो काफी अच्छे से श्रृंगार करके सुंदर साड़ी पहन कर आई थी । जिसमें बहुत ही खूबसूरत लग रही थी ।
मैंने कहा - साड़ी मे आप काफी खूबसूरत लग रही हैं । आप साडी पहना कीजिये ।
वह शर्मा गई ।
पुरुषों के साथ में दिक्कत होती है कि वह प्रशंसा करने से बहुत ज्यादा झिझकते हैं । हर किसी को प्रशंसा अच्छी लगती है । यदि आपको इस बात पर विश्वास ना हो तो इसे आजमा कर देखिए ।

आपकी पत्नी ने अच्छी सब्जी बनाई हो और आप कहिए कि आज सब्जी बहुत अच्छी बनी है तो यकीन मानिए की आपको अगले दिन उससे भी अच्छी सब्जी खाने को मिलेगी ।

कोई छोटी बच्ची अच्छे कपड़े पहन कर ठुमक रही हो ..... उसे आप कह दे कि तुम बिल्कुल परी लग रही हो तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा ।

इन सब चीजों में आपका कुछ खर्च नहीं हो रहा है .....

केवल आप अपने शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं..... मगर यह किसी के हृदय में खुशी का संचार कर सकता है ।

इसलिए कोशिश करें कि आपके शब्द किसी को खुश कर सकते हैं तो वह जरूर करिए ।

खैर .....

भोजन करने के दौरान भी इधर-उधर की बातें चलती रही ।

शीतल ने बताया की गूजरमल जी अभी तक नहीं लौटे हैं ।

अक्सर वे रविवार की शाम तक लौट जाते थे .....

कई बार ऐसा होता था कि वह रविवार रात गांव में ही रुकते और सोमवार की सुबह वापस लौटते थे ।

संभवत: आज भी वे वैसा करने वाले थे ।

बारिश का मौसम था और पानी बरस रहा था ।

इसलिए वह रुक गए होंगे ।

थाली लेकर वह चली गयी .....

भोजन करके मैं अपने कमरे मे गाना सुनने लगा । मेरे पास एक बैटरी से चलने वाला टेप रिकार्डर था । मुझे पुराने फिल्मी गाने बहुत पसंद हैं । उनका बोल और संगीत दोनो बड़ा प्यारा होता है । जिसे सुनने से बडी आत्मिक शांति मिलती है ।

बारिश बढ़ गयी थी और बिजली कड़कने लगी थी । तेज हवाएं भी चल रही थी और बिजली गुल हो गई । बारिश के मौसम में पंखे की हवा में सोने का अपना अलग आनंद होता है .....

लेकिन अगर पंखा ना हो तो उमस की वजह से थोड़ी बेचैनी लगने लगती है ।

इसलिए मैं कपड़े खोल कर सो गया ।

गर्मी लग रही थी लेकिन गाना सुनते सुनते मुझे नींद लग गई और मैं गहरी नींद में सो गया ।

आधी रात के बाद का समय रहा होगा जब मुझे ऐसा लगा कि कोई मेरे बगल में आकर लेट गया है ।

वह शीतल थी ....

वह भी निर्वस्त्र थी .....

फिर वही हुआ जो ऐसे अवसरों पर होता है .....

रात भर वह मेरे साथ रही और सुबह होने पर उठकर चली गयी ।

एक लंबे समय के बाद मैंने स्त्री सुख का अनुभव किया था ।

सौम्य शीतल और स्निग्ध .....

तृप्तिदायक.....

स्त्री साहचर्य !!!

पिशाचिनी का संग तो सुख से ज्यादा पीड़ा का अनुभव देता था ।

वह था डरावना....

पीड़ा दायक.....

और दुखद .....

समय और भावना के प्रभाव के साथ सब कुछ हो चुका था लेकिन फिर मुझे अचानक याद आया कि पिशाचिनी ने तो इसके लिए मना किया था ।

यह विचार आते ही मन में भय की उत्पत्ति होने लगी ।

ऐसा लगने लगा कि कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं हो जाएगी ।

खैर ! जो होना था वह हो चुका था अब आगे की बात तो पिशाचीनी के हाथ में थी ।

स्नान आदि कर्मों से निवृत्त होकर मैंने अपनी दुकान खोली । गूजरमल भी सुबह गांव से वापस आ चुके थे और उनकी दुकान भी खुल चुकी थी ।

दोपहर हो गई लेकिन कोई भी ग्राहक दिखाई नहीं दिया ।

मेरा माथा ठनका !

क्योंकि इतनी देर में तो तीन चार लोग आ जाते थे ।

फिर मुझे लगा कि हो सकता है बारिश की वजह से लोग नहीं आ पा रहे हैं ।

दोपहर के भोजन का समय हो चुका था ।

शीतल भोजन लेकर आ चुकी थी ।

उसकी आंखों में आज अलग ही भाव दिख रहा था ।

स्त्री जब अपने आप को किसी के सामने समर्पित कर देती है तो उसके प्रति उसका भाव बदल जाता है ....

उस पर वह अपना अधिकार महसूस करने लगती है ....

आज उसने उसी प्रकार अधिकार जताते हुए मुझे भोजन कराया और दो रोटी ज्यादा खिला गई .....

भोजन करके मैं वापस थोड़ी देर विश्राम के बाद दुकान पर आ बैठा लेकिन शाम तक कोई ग्राहक नहीं आया ।
दोपहर में मौसम भी खुल चुका था तब भी कोई नहीं आया ।

मैंने इसका कारण जानने के लिए मन में प्रश्न किया लेकिन कोई उत्तर नहीं आया ।
मेरे मन में हलचल होने लगी थी ।
मैं समझ गया कि कुछ तो गड़बड़ है .....

वह पूरा हफ्ता वैसे ही गुजरा.....
मैं दिन भर बैठा रहता है लेकिन एक भी ग्राहक दुकान पर नहीं आता था ।
मेरे पास लगभग एक डेढ़ लाख रुपए जमा हो चुके थे । मेरे खर्चे ज्यादा नहीं थी इसलिए उन पैसों से कम से कम 6 महीने का काम चल सकता था । अगर जरूरत पड़ती तो मैं कोई दुकान खोल सकता था और कमाई का दूसरा जरिया बना सकता था ।

मुझे लगा कि पिशाचीनी चली गई है और अब मुझे ज्योतिष का कार्य छोड़ना पड़ेगा । पिशाचीनी के सहयोग के बिना मेरा ज्योतिष किसी काम का नहीं था । मेरे मन में कहीं यह लालच भी था कि काश वह साथ में रहती तो चार छे महीने में और ढेर सारे पैसे आ सकते थे .....

दूसरी तरफ यह संतुष्टि भी थी कि उसके पैशाची भोग से मुझे मुक्ति मिल चुकी थी और मैं स्वतंत्र हो गया हूँ ।

शनिवार आया .....

गुजरमल जी फिर गांव चले गए ।

जब तक पर्दा रहता है .....

तब तक स्त्री संकोच करती है .....

और.....

जब एक बार पर्दा हट जाये तो फिर स्त्री की उन्मुक्तता की कोई सीमा नहीं होती .....

विवाहित जोड़े मेरे भाव को समझ गए होंगे .....

रात हो चुकी थी !

शीतल भोजन लेकर आई !

वह पूरे श्रृंगार के साथ किसी दुल्हन की तरह सज धज कर आई थी .....

यानि आज फिर .....

और फिर.....

वही हुआ .....

पूरी उन्मुक्तता के साथ शीतल .....

और उसकी उन्मुक्तता से मुग्ध होता हुआ मैं .....

कब रात बीती .....

कब दिन आया .....

पता नहीं चला .....

और वैसे ही गुजर गए शनिवार और रविवार .....

सोमवार को फिर मैंने दुकान खोली । लग रहा था कि आज भी कोई नहीं आएगा लेकिन ग्यारह बजे के आसपास एक आदमी आ गया । पहले के अनुसार ही मैंने उसको सवाल पूछने का अवसर दिए बिना ही कुंडली का निर्माण करना प्रारंभ कर दिया ।

अब बारी थी..... बीत गई बातों को बताने की ।

इसमें सहयोगिनी हुआ करती थी पिशाचिनी..... जो अब मौजूद नहीं थी ।

लेकिन आदत के अनुसार मैंने मन में प्रश्न किया - यह कौन है ?

जवाब नहीं आया .....

किसी तरह ....

इधर उधर की बातें बताकर मैंने उसे निपटाया .....

असंतुष्टि के भाव उसके चेहरे पर स्पष्ट नजर आ रहे थे .....

रोज इसी प्रकार एक दो आदमी आ जाते ।

मैं वापस अपनी पुरानी स्थिति में पहुंच चुका था जहां मैं कुछ भी बताने के लायक नहीं रह गया था ।

वह शनिवार का दिन था .....

मेरी भूख असामान्य रूप से बढ़ चुकी थी और दोपहर को मैंने 20-25 रोटियाँ खाई ।

शीतल रोटियां खिलाते खिलाते मुझे छेड़ रही थी लेकिन मैं भयभीत था ।

मैं समझ गया था कि रात पिशाचिनी का आगमन होगा .....

धर्म संकट में था कि मैं उसे क्या जवाब दूंगा ?

इस डर में भी कि वह मेरा क्या करेगी ?

गूजरमल शाम को गाँव जाने वाले थे ।

शीतल रात को लेकर उत्साहित थी .....

और मैं पिशाचिनी को लेकर भयभीत था .....

मैंने शीतल को समझाया - आज मुझे देवी की विशेष पूजा करनी है इसलिए तुम रात को मत आना ।

शीतल - पूजा के बाद बुला लेना ।

मैं - ठीक है । जल्दी हो जाएगा तो बुला लूँगा ...

नहीं तो कल !

मैं जानता था कि....

पिशाचिनी का कार्यक्रम तो रात भर चलेगा.....

बाद में बुलाने का तो कोई प्रश्न ही नहीं है ।

उसे टालना भी जरूरी था.....

मैं निर्वस्त्र होकर लेटा हुआ था ....

रात के लगभग दस बजे पिशाचीनी का आगमन हुआ ।

मैं उठकर बैठ गया ।

उसकी आंखें गुस्से से लाल थी ।

उसने आते ही मेरे गाल पर जोर का थप्पड़ मारा ।

मेरा पूरा चेहरा घूम गया ।

सर सनसनाने लगा.....

ऐसा लगा जैसे किसी लकड़ी की पट्टी से वार हुआ हो ।

इतना जोरदार था वह वार !!!

इतने मे वह नहीं रुकी .....
उसने मुझपर लात घूंसों की बौछार कर दी ।
काफी देर धुलाई करने के बाद वह मुझ पर चढ़ गई ।
आज का संभोग पहले से भी ज्यादा जटिल और जोरदार था .....
मुझे अपने अंग की चमड़ी फटने का एहसास हो रहा था .....
उसके नुकीले नाखून मेरे शरीर पर यहां वहां गड रहे थे.....
बीच बीच मे वह किसी कुत्ते की तरह मुझे काट भी लेती थी .....
ऐसा लग रहा था जैसे वह मुझे नोच कर खा जाना चाहती हो ।
तीन चार घंटे तक वह मुझे नोचती खसोटती रही .....
जब शांत हुई तो बोली - तूने स्त्री संग किया ? .....
मैंने तुझे मना किया था ।

अब मैं क्या बोलता ।
गलती तो मैं कर चुका था ।

मैंने उसके पांव पकड़े और माफी मांगी .....
काफी देर गिड़गिड़ाने के बाद वह मान गई ।
बोली - यह गलती दोबारा नहीं होनी चाहिए .....
मैंने सहमति में सिर हिलाया और मेरे सीने पर एक लात मारकर वह चली गई ।

मैं उसी प्रकार शक्ति हीन पड़ा रहा .....
मेरे अंग से खून निकल रहा था .....
पूरा शरीर खरोंचों से भरा हुआ था .....
ऐसा लग रहा था जैसे किसी जंगली जानवर ने हमला कर दिया हो .....

शीतल देर रात तक इंतजार करती रही ....
लेकिन मैंने उसे नहीं बुलाया ..... आखिर वह थककर सो गयी ।

सुबह चाय लेकर वह आई !
मेरी हालत देखकर वह चौंक गयी !
शीतल - ये आपको क्या हो गया है ? रात को किसी के साथ मारपीट हो गयी क्या ?
अब मैं उसे क्या बताता ?

मैं बड़ी मुश्किल से उठा .....
उसने आगे बढ़कर मुझे अपने सीने से लगा लिया और मेरे सर पर हाथ फेरने लगी ।

संस्कृत के एक श्लोक मे सर्वगुण सम्पन्न पत्नी के विषय मे कहा गया है कि:-

कार्येषु दासी, करणेषु मंत्री, भोज्येषु माता, शयनेषु रम्भा ।
धर्मानुकूला क्षमया धरित्री, भार्या च षाड्गुण्यवतीह दुर्लभा ।।

कार्येषु दासी :-
जब घर का कार्य करें तो वह दासी जैसा व्यवहार करती है ।

करणेषु मंत्री :-
जब किसी विषय पर राय देने की जरूरत हो तो किसी कुशल मंत्री की तरह व्यवहार करती है ।

भोज्येषु माता:-
भोजन कराते समय माता की तरह व्यवहार करती है ।

शयनेषु रम्भा:-
शयन कक्ष में अर्थात रात्री काल मे रंभा अप्सरा की तरह अर्थात काम कुशला स्त्री की तरह व्यवहार करती है ।

धर्मानुकूला :-
जो धर्म के अनुकूल व्यवहार करने में सक्षम है । अर्थात गलत सही का भेद करने मे समर्थ है ।

क्षमया धरित्री:-
और जिसका धैर्य पृथ्वी के समान विशाल हो ।

ऐसी 6 गुणों से युक्त पत्नी का मिलना अत्यंत दुर्लभ है ।

इनमें से कई स्थितियों को उन पुरुषों ने अवश्य अनुभव किया होगा जो विवाहित हैं या किसी प्रेमिका के संग रहते हैं । स्त्री के अंदर इनमें से सारे गुण आंशिक रूप से या कुछ ज्यादा और कुछ कम पाए जाते हैं ।

शीतल भी मुझे रोज भोजन कराती थी ।
देह सुख भी प्रदान कर रही थी और मेरा ध्यान भी रख रही थी .....

इसलिए उस के प्रति मेरी भावना किसी पत्नी के जैसी ही हो गई थी ।

जब उसने मेरे सर पर हाथ फेरा तो मैं अपने आप को रोक नहीं पाया और फफक फफक कर रो पड़ा .....

अधिकांश पुरुष विषम परिस्थितियों में अपने आप को बहादुर दिखाने की कोशिश जरूर करते हैं .....
लेकिन जब पत्नी का मातृ रूप सामने आता है तो उनके अंदर की रुलाई फूट पड़ती है.....
और वहां पर उसके हृदय की पीड़ा आंसुओं के माध्यम से बह निकलती है ....
मुझे रोता हुआ देखकर उसने मुझे अपने गले से लगा लिया ..... वह मुझसे लिपट गई और मैं भी उससे लिपट गया .....
काफी देर रो लेने के बाद मैं शांत हुआ ।
उसने मुझसे बार-बार पूछने की कोशिश की .....
लेकिन.....
रात के अनुभव के बाद मैं कुछ भी नहीं बताना चाहता था ।

मैं उसे टालने की कोशिश करता रहा और वह बार-बार मुझसे पूछती रही ।

काफी देर तक जब मैंने उसे कुछ नहीं बताया तो वह रूठ कर चली गई !

हां ! चाय भी छोड़ गई ।

मैंने चाय पी और उसी अवस्था में वापस लेट गया .....

क्योंकि.....

खड़े होने की ताकत तो बची ही नहीं थी ।

मैंने सोचा कि शीतल चली गई है और वापस आंखें बंद कर लेट गया.....

लेकिन वह मेरी गलतफहमी थी ।

संस्कृत मे एक श्लोक है जिसकी पहली पंक्ति है .....

अर्थातुराणां न सुखं न निद्रा,कामातुराणां न भयं न लज्जा ।

अर्थात.....

धन के लिए आतुर मनुष्य को सुख और निद्रा नहीं ;

काम के लिए आतुर व्यक्ति को भय और लज्जा नहीं ।

यही वास्तविकता है जो हमारे आसपास अनेक चटपटे और अटपटे प्रसंगों को जन्म देती है ।

लगभग आधे घंटे के बाद वह वापस लौटी.....
और इस बार वह पूर्ण निर्वस्त्र थी ।
वह आकर मुझसे लिपट गई और फिर भावनाओं का आवेश बढ़ता चला गया ।

अंग्रेजी के एक विद्वान का कथन है कि
a man is hard when he is soft.....
and he is soft when he is hard.....

जो विवाहित स्त्री पुरुष हैं वह इस बात का मतलब अच्छे से समझते होंगे ।
खैर.....
पिशाचिनी की सारी बात धरी की धरी रह गई और हम दोनों वापस अपने खेल में लग गए ।
उसने मेरे मुंह से पिशाचिनी के विषय में भी सब कुछ उगलवा लिया ।
ऊपर के विद्वान वाले कथन वाली स्थिति आ गई थी और वहां पर उसे मना करना मेरे लिए संभव नहीं था .....

इसलिए मैंने उसे पिशाचीनी के विषय में सब कुछ बता दिया । मैं यह भूल गया कि इसके लिए उसने मुझे साफ-साफ मना किया था । खैर गलती तो हो चुकी थी । रविवार का पूरा दिन उसी प्रकार से गुजरा । मुझे लगा कि उसने एक बार तो माफ कर दिया है ..... दोबारा माफी मांग लूंगा और मामला सेटल हो जाएगा ।

मैं नहीं जानता था कि आगे क्या होने वाला है ?

रविवार की शाम को गूजरमल घर लौट आए । मुझे भी थोड़ी सी शांति मिली कि अब शीतल नहीं आएगी । भोजन आदि संपन्न करके मैं आराम से सो गया ।

तभी .....

मेरे गाल पर जोर का तमाचा पड़ा ।

मैं समझ गया कि पिशाचिनी गुस्सा है । मैं हाथ जोड़कर माफी मांगने लगा लेकिन वह स्पष्ट नहीं हुई । थोड़ी देर तक मैं ऐसे ही हवा में माफी मांगता रहा .... उसके बाद फिर सो गया ।

जैसे ही नींद लगी !

फिर दूसरे गाल पर जोर का तमाचा पड़ा .....

सारी रात ऐसा ही चलता है हल्की सी आंख लगती और जोरदार तमाचा गाल पर पड़ता .....

अब मुझे इस प्रकार के मारपीट की आदत हो गई थी तो मुझे लगा कि अब ऐसे ही चलते रहना है । मन में एक विचार यह भी आया कि जितना जल्दी हो सके यह घर बदल लेता हूं क्योंकि यहां रहने में खतरा है ।

मैंने वापस अपने गांव जाने का भी विचार किया क्योंकि वहां पर भी एक हिसाब बराबर करना बाकी था ।

वह था अपने दोस्त कादिर का .... जिसने मेरी पूरी संपत्ति हड़प ली थी । मैं उससे बदला भी लेना चाहता था और अपनी संपत्ति को वापस भी पाना चाहता था । ऐसा तभी संभव होता जब पिशाचिनी पूर्ण रूप से मेरी सहयोगी हो ।

अब स्थितियां बदल चुकी थी । रात भर उसने तमाचा मार मार कर मेरी हालत खराब कर दी थी ।

मैं पिशाचिनी को दिए गए वादे को तोड चुका था .... शीतल को उसके बारे में बता चुका था ...

यानी दो दो गंभीर गलतियां हो चुकी थी और इसके दुष्परिणाम आने बाकी थे ।

दोपहर तक मैं सोता रहा ।
जब मेरी नींद खुली तो बड़े जोरों की भूख लग रही थी । शीतल को अब तक आ जाना चाहिए था लेकिन वह नहीं आई । यह बात मुझे थोड़ी सी गड़बड़ लगी । लेकिन फिर मैं नित्य कर्मों से निवृत्त होने के लिए चला गया और उसके बाद स्नान आदि करके जब बाहर निकला तो मैंने पीछे की तरफ का दरवाजा चेक किया वह खुला हुआ था । मैं गूजरमल जी के मकान में चला गया लेकिन वहां पर कोई नहीं था .....
न गूजरमल और ना ही शीतल ।
पूरा मकान खाली पड़ा हुआ था .....

यह बड़ी अजीब बात थी क्योंकि आमतौर पर ऐसा नहीं होता था । दोनों में से कोई ना कोई घर पर मौजूद जरूर रहता था । मैं वापस अपने घर में आ गया और मैंने बाहर निकल कर देखा तो गुजरमल की दुकान भी बंद थी ।
मैंने पड़ोसी से पूछा कि क्या हो गया तो उन्होने बताया वे अपनी पत्नी को लेकर अस्पताल गए हैं । मेरी इच्छा हुई कि मैं दौड़कर वहां पहुंच जाऊं फिर मुझे लगा कि

ऐसा करना उचित नहीं होगा और वापस अपने दुकान पर आकर बैठ गया ।

थोड़ी देर में एक ग्राहक आया आदत के अनुसार मैंने मन ही मन उसके विषय में पूछा .....
लेकिन मुझे तुरंत अपनी गलती का एहसास हुआ और फिर स्वयं को सांत्वना देने लगा .....कि पिशाचिनी चली गयी है तुझे अपने हिसाब से बताना है ।
तभी
अद्भुत आश्चर्य.....
पिशाचिनी का स्वर मेरे कानों में सुनाई देने लगा । उसने मेरे सवालों का जवाब दिया ....
मैं खुशी से फूला नहीं समा रहा था ।
मुझे लगा कि पिशाचीनी ने मुझे माफ कर दिया और अब मैं वापस सामान्य हो गया हूं ।
मैंने मन ही मन उसे धन्यवाद दिया ।

गूजरमल शाम को घर वापस लौटे तो मैंने उनसे पूछा कि शीतल को क्या हुआ है ?
उन्होंने दुखी होकर बताया - सुबह-सुबह चक्कर खाकर गिर गई थी और बेहोश हो गई थी । उसकी हालत

देखकर उसे अस्पताल ले गया था । अभी वह अस्पताल में एडमिट है और उसके शरीर में खून की कमी हो गई है .....

शीतल वैसे दुबली पतली थी लेकिन खून की कमी जैसी कोई बात उसमें मुझे दिखाई नहीं देती थी .... खून की कमी होने पर शरीर में पीलापन दिखाई देने लगता है और साथ ही शरीर में थकावट काम , करने की इच्छा ना होना और हमेशा सुस्त रहना .... यह सारे लक्षण दिखाई देते हैं जोकि शीतल में बिल्कुल नहीं थे ।

मुझे समझ में नहीं आया कि कल तो अच्छी खासी थी .....

अचानक उसे खून की कमी कैसे हो गई ।

रात को गूजरमल जी के साथ मैं उसे देखने अस्पताल गया तो नर्स ने बताया कि उसे भारी रक्तस्राव हो रहा था ।

जिसकी वजह से खून की कमी हो गयी थी .....

तब तक दो बोतल खून चढ़ाया जा चुका था .....

गुजर मल जी अकेले थे और सुबह से अस्पताल में लगे हुए थे तो मैंने कहा कि आप घर जाकर विश्राम करिए मैं यहां पर रुकता हूं। पहले तो वे इसके लिए राजी नहीं हुए लेकिन मेरे बार बार कहने पर वे मेरी बात मान कर घर चले गए। मैं वहीं अस्पताल में रुक गया।

रात लगभग बारह बजे के आसपास मुझे अचानक वातावरण में भारीपन महसूस होने लगा.....

थोड़ी देर में मेरी नींद खुल गई !

मैंने देखा तो शीतल का गाउन ऊपर उठा हुआ था और पिशाचिनी उसके गुप्त भाग से खून चूस रही थी !

मैं उसे रोकने के लिए आगे बढ़ा तभी उसने एक जोरदार तमाचा मारा और मैं पलट कर नीचे गिर गया।

मैं उठकर फिर उसकी तरफ बढ़ा तो उसने मेरी गर्दन अपने बाएं हाथ में दबोच ली !

उसके मजबूत नाखून मेरी गर्दन मे गड़ने लगे थे !

उसने गुर्राकर कहा - चुपचाप बैठा रह ! तूने इसे मेरे बारे में बता दिया है अब यह जिंदा नहीं रह सकेगी। इसके बाद तेरी बारी है ....

मेरी गर्दन पर दबाब बढ़ता जा रहा था !

मुझे अपनी सांस टूटती हुई महसूस हो रही थी !
उसने मुझे छत की ओर उछाल दिया ....
मैं धड़ाम से नीचे गिरा और बेहोश हो गया ।
वह वापस अपने काम में लग गई । सुबह मुझे होश आया तो शीतल की हालत पहले से ज्यादा खराब हो चुकी थी जिसका कारण मैं जानता था लेकिन किसी को बता नहीं सकता था ।
मैं संभावित मृत्यु की आशंका से भयभीत बैठा रहा ।

सुबह गुजर मल जी आ गए । मैं अस्पताल की ड्यूटी से फ्री हो गया और वापस घर आ गया । घर आकर मैं स्नान आदि करके तैयार हुआ....

मुझे लगने लगा कि यह सब कुछ मेरी वजह से हो रहा है । मुझे शीतल को बचाने का प्रयास करना चाहिए.....
इस मामले में अब मेरी मदद सिर्फ एक ही आदमी कर सकता था और वह था काला बाबा !!
मैं मसान घाट की ओर चल पड़ा ....
काफी दिन हो चुके थे ।
वहां पहुंचकर मैं अपने मित्र डोम से मिला । वह मुझे देख कर बहुत खुश हुआ लेकिन उसका काम चल रहा

था इसलिए उसने मुझे थोड़ी देर इंतजार करने के लिए कहा ।

मैं हड़बड़ी में था ।

मैंने उससे पूछा - काला बाबा कहां है ?

मुझे उसके वहाँ होने की उम्मीद तो नहीं थी लेकिन उसने मुझे अपनी झोपड़ी की तरफ इशारा कर दिया । मुझे लगा कि मुझे वह झोपड़ी में बैठने के लिए कह रहा है । मैं थोड़ी झल्लाहट के साथ जाकर उसकी झोपड़ी की ओर बढ़ गया । जैसे ही मैंने झोपड़ी के अंदर प्रवेश किया मैं यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि काला बाबा वहां आराम से जमीन पर पड़ा हुआ सो रहा था ! बाजू में दारु की 2-3 बोतलें पड़ी हुई थी ! जो खाली थी !!

मैं उसके उठने के इंतजार में वही बैठ गया.....

उस समय सुबह के लगभग नौ बज रहे थे । दस बजे के आसपास डोम अपने झोपड़ी में वापस आया और मुझसे पूछा - क्या हुआ ?

मैं बोला - कुछ समस्या आ गई है काला बाबा से उसका समाधान चाहता हूं ।

काला बाबा से मैंने साधना प्राप्त की थी इसलिए वह मेरे गुरु तुल्य हुआ । उस मर्यादा का ध्यान रखते हुए मैं उसे उठाने से झिझक रहा था ....लेकिन डोम के लिए तो वह मित्र था..... उसने उसे झिंझोड़ कर उठा दिया । वह एक बड़ी सी गाली देता उठ बैठा ।

बोला - क्या हुआ साले ! सोने भी नहीं देता । क्या तेरी मां मर गई है ?######

डोम निस्पृह भाव से बोला - अबे देख ! तेरा चेला बैठा है .... उसको तेरे से कुछ जरूरी काम है ।

काला बाबा के मुंह से फिर एक बड़ी सी गाली निकली !

बोला - मा######!!! @#### !!! पिशाचीनी सिद्ध करने के बाद इधर उधर मुंह मारता फिर रहा है ! साला !

मरेगा .... कुत्ते की मौत मरेगा !

फिर मेरी ओर देखकर उसने मेरे गाल पर एक जोर का तमाचा मारा और बोला - साले तुझे साधना करने से पहले सब कुछ तो बताया था .....

नंगी लड़की देख कर फिसल गया ।

अब वह तुझे जिंदा नहीं छोड़ेगी और ना ही उस लड़की को .....

मैं काला बाबा के पांव में लिपट गया और बोला - गलती हो गई बाबा ! लेकिन मेरी वजह से उसकी जिंदगी क्यों तबाह हो !
माफ कर दो ! कैसे भी उसे बचा लो .....

काला बाबा बोला - बहुत मुश्किल है ! पिशाचिनी है ! वह किसी की बात नहीं मानती ।
मैं फिर उसके पांव में लोट गया....
बोला - बाबा ! आप ही बचा सकते हो । गलती तो मेरी थी ..... लेकिन उसकी सजा वह भुगत रही है ।
काफी देर तक मैं उसके पांव पकड़कर मान मलौवल करता रहा ।

आखिरकार वह पसीज गया ।

काला बाबा बोला - ठीक है ! उसके बदले में तू अपनी जान दे दे ।

मैं थोड़ी देर खामोश रहा फिर बोला - ठीक है बाबा ! मैं इसके लिए भी तैयार हूं ।

तभी डोम मेरे बचाव में सामने आ गया ।

वह काला बाबा को बोला - साले , तू अपने आप को बहुत बड़ा सिद्ध बताता है । अपने चेले को एक पिशाचिनी के हाथ से नहीं बचा सकता तो तेरी सिद्धि किस काम की ?

डोम की बात सुनकर काला बाबा तिलमिला गया !

वह बोला - साले तू अब मुझे सिद्धि के बारे में बताएगा ! चांडाल !

मरे मुर्दों को जलाने के सिवा तूने सीखा ही क्या है !

तू क्या जानता है साधना सिद्धि के बारे में ?

तू क्या जानता है पिशाचिनी के बारे में ?

वह तो मैं हूं इसलिए उसने इसे जिंदा रखा हुआ है वरना कबका इसका खून पीकर इसकी लाश को ठिकाने लगा चुकी होती ।

अब डोम बैकफुट पर आ गया था ।

वह काला बाबा का हाथ पकड़कर बोला - जब तू इसको बचा सकता है तो तू लड़की को भी बचा सकता है।

डोम की मनुहार से बाबा शायद पसीज गया ....

काला बाबा - हां ! बचा तो सकता हूं, लेकिन तेरा दोस्त साला ###**** है ! जहां औरत दिखती है इसकी नियत खराब हो जाती है ! कमीना है साला ! गलत आदमी को चेला बना लिया .....

फिर मेरी ओर देखकर बोला - तुझ से तो कुत्ते अच्छे हैं जो कम से कम अपने सीजन में ही कुत्तिया के पीछे दौड़ते हैं.....

मैं उसकी सारी गालियां को सुनता हुआ उसके चरणों में पड़ा हुआ था .....

क्योंकि मैं जानता था कि इस मायाजाल से केवल वही मुझे बचा सकता है । अब मेरे सपोर्ट में डोम भी आ गया था.....

डोम की मनुहार और उसके साथ अपने संबंधों की वजह से काला बाबा आखिरकार मेरी सहायता करने को राजी हो गए .....

काला बाबा ने बताया कि यह प्रक्रिया बहुत लंबी और जटिल है !

इसमें 3 दिन का समय लगेगा और 3 बकरों की बलि दी जाएगी .....

अगर उसमें भी वह नहीं मानी तो एक भैंसे की बलि देनी पड़ेगी .....

अगर उसमें भी नहीं मानी तो फिर उसे कोई नहीं मना सकता .....

इसके अलावा सामग्री की भी एक लंबी चौड़ी लिस्ट थी ! जिसमें दारू की बोतलो के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के मांस और कई चित्र विचित्र चीजें शामिल थे । कुल मिलाकर उसने डेढ़ लाख रुपए का खर्चा बताया था । इसमें भैंस का खर्च भी शामिल था ।

जो भी मेरे पास पिशचिनी की कृपा से आया था वह सब खर्च हो गया ।

उसी रात से अनुष्ठान करने की बात तय हुई.....

रात का समय हुआ बहुत सारी तैयारियां की जा चुकी थी ।

मसान घाट के एक कोने में जहां कोई नहीं जाता था और अंधेरा भी काफी था ।

वहां पर एक चिता सजाई गई थी.....

मेरे समझ में यह नहीं आया कि यह खाली चिता क्यों सजाई गई है ?
जबकि वहां पर पहले से दो-तीन चिताएं जल रही थी ।
इसका पता बाद में चलने वाला था.....

धीरे-धीरे रात गहराने लगी.....
काली अंधियारी रात अपना आँचल फैलाये सो रही थी ।
सन्नाटा चारों ओर खामोशी से पाँव पसार चुका था !
ग्यारह बजे के आसपास का समय रहा होगा .... जब नदी में कुछ बहता हुआ दिखाई दिया । जो किसी लकड़ी के लट्ठे की तरह दिख रहा था ।

वह देखते ही काला बाबा ने मुझे इशारा किया और हम दोनों नदी में कूद पड़े ।
मैं बाबा के साथ तैर रहा था । बाबा ने जाकर उस लकड़ी को पकड़ लिया और उसे लेकर किनारे जाने का निर्देश दिया ।
मैंने उसे बाबा के हाथ से ले लिया !
उसे स्पर्श करते ही बेहद लिजलिजा सा आभास हुआ !
वह एक महिला का शव था !

पानी में पड़े रहने की वजह से लिजलिजा हो चुका था। किसी तरह उसे साथ में खींचते हुए मैं नदी तट तक आ गया। वहां पर हल्की रोशनी थी। अब स्पष्ट दिखाई दे रहा था। वह एक अधेड़ महिला का शव था। जो संभवत: 40-45 साल की रही होगी। उसे किनारे पर खींचकर लाने के बाद हम उस स्थान पर ले आए जहां पर चिता तैयार की गई थी।

रात हो चुकी थी और पूरा शमशान खाली था ..... दूर-दूर तक कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था.....
वैसे भी रात को मसान में जाने से लोग डरते हैं और कोशिश करते हैं कि उससे दूर ही रहें।
जो भी हो.....
इस प्रकार का एकांत और डर दोनों ही साधकों के लिए लाभदायक होता है। ऐसी स्थिति में कोई भी उन्हें डिस्टर्ब नहीं करता और वह आसानी से अपनी गोपनीय क्रियाएं संपन्न कर सकते हैं। हम लोग भी वैसी ही स्थिति में थे।

सजाई गयी चिता के बाजू वाली जमीन पर उसको लिटा दिया गया । उसके बाद बाबा ने एक चौमुखा दीपक उसके सर के पास जला दिया ।

अंधेरी रात में उसकी पीली पीली रोशनी टिमटिमा रही थी !

नदी के बहने की आवाज आ रही थी !

झींगुरों की आवाज के अलावा वीराने में कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था.....

काला बाबा अपनी क्रियाओं और मंत्र शक्ति के द्वारा पिशाचीनी का आह्वान करने लगे .....

काला बकरा बंधा हुआ था .....

काफी देर तक उसका मंत्र जाप चलता रहा !

वह मंत्र जाप की ध्वनि उस सुनसान वातावरण में भय की सृष्टि कर रही थी ।

लगभग एक घंटे का मंत्र जाप हुआ होगा जब अमृत शरीर में हलचल होने लगी ।

मुझे काला बाबा ने पहले ही बता दिया था कि मुझे क्या करना है ....

जैसे ही उसके शरीर में हलचल हुई मैंने मदिरा की एक बोतल उसके मुंह से टिका दी !

गट गट की आवाज के साथ वह बोतल खाली हो गई .....

फिर मैंने एक मास खंड उसके मुख में ढकेल दिया !

चपर चपर चबाने की आवाज आने लगी !

कल्पना करें.....

एक मुर्दा देह.....

जो आपके सामने पड़ी हुई थी.....

और अचानक वह दारु पीने लगे और मांस खाने लगे.....

तो .....

आप की स्थिति क्या होगी ?

मेरी स्थिति भी कुछ कुछ वैसी ही थी ।

बाबा का मंत्र जाप जारी था !

दस पंद्रह मिनट के बाद शव उठ कर बैठ गया और उसने अपना हाथ फैलाया ।

मैंने मदिरा का बोतल उसके हाथ में थमा दी । एक-एक करके ग्यारह बोतल उसने उदरस्थ कर दी .....

साथ में जो मांस रखा हुआ था वह भी सफाचट कर दिया । थोड़ी देर में अपने स्थान पर हिलने लगी ।

हिलती हिलते ही उसने अट्टहास किया !

बोली - बाबा नियम भंग हुआ है । प्रतिघात तो होगा । सजा पूरी होगी ।

बाबा ने हाथ जोड़ लिया और कहा - गलती हुई है । माफ कर दो .....

पिशाचिनी - जीव तो लेकर जाऊँगी ।

बाबा - जीव के बदले मे जीव प्रस्तुत है उसे स्वीकार करो.....

उसका भयंकर अट्टहास गुंजा और वह बोली - नियम भंग हुआ है ! जीव जाएगा ।

बाबा- जीव के बदले जीव ग्रहण करो और उसे क्षमा करो ।

शव - जो हुआ वह दुबारा तो नहीं होगा । अगर हुआ तो इस बार तेरा चेला भी नहीं बचेगा । वचन दे कि फिर तू उसकी रक्षा के लिए नहीं आएगा ।

पिशाचीनी सुनिश्चित कर लेना चाहती थी कि दोबारा ऐसी गलती नहीं होगी और अगर हो गई तो उसे दंड देने का अधिकार रहेगा ।

बाबा हस्तक्षेप नहीं करेगा ....

बाबा ने कहा - स्वीकार है ।

पिशाचिनी - ठीक है ! जीव के बदले जीव

स्वीकार .....

बाबा ने मुझे इशारा किया !

मैं उस बकरे को पकड़कर ले आया !!

बकरा भयभीत अवस्था में सर झुका कर घिसटता हुआ मेरे साथ आ गया था ।

मैंने उसे उठाकर शव के सम्मुख कर दिया ।

उसने एक किलकारी भरी !

उस बकरे को किसी खिलौने की तरह हवा में उछाल दिया !

जब दोबारा वह उसके हाथ में आया तो उसने एक ही झटके में उसकी गर्दन मरोड़ कर दी और उसके गले से निकलते हुए रक्त को मुंह लगाकर पीने लगी !

चार पाँच मिनट में बकरे का पूरा शरीर रक्तहीन हो चुका था और पिशाचिनी तृप्त हो चुकी थी ।

इसके बाद उसने पूरे बकरे को उदरस्थ कर लिया अब उसका कोई अवशेष मौजूद नहीं था ।

मसानी साधना थी !

इसलिए हम दोनों भी दिगंबर अवस्था में थे !

बकरे को उदरस्थ कर लेने के बाद उसने फिर अपना हाथ फैलाया !

बाबा ने उसके हाथ में अपने पास रखा हुआ मदिरा का पात्र पकड़ा दिया !

एक ही सांस में उसने पूरा खतम कर दिया !

उसमे कम से कम आधा लीटर शराब रही होगी ।

तभी....

मैंने देखा बाबा अपने स्थान से उठकर दक्षिण दिशा की ओर चला गया ।

यह मेरे लिए एक बेहद डरावनी स्थिति थी !

मुझे लगा कि यह मुझे अकेला इस पिशाचिनी के साथ छोड़कर क्यों चले गए ?

कहीं यह मुझे निपटा तो नहीं देगी ?

पिशाचिनी वह भी जागृत पिशाचिनी का क्या भरोसा ?

यह सोचकर मैं मन ही मन भयभीत हुआ जा रहा था ।

मैं उन्हे अंधेरे मे गुम होते हुए देखता रहा ।

लेकिन तभी.....

अचानक उसने मेरी छाती पर एक लात मारी और मैं जमीन कर पीछे की तरफ पलट गया ।

मेरे पलटते ही वह मेरे ऊपर सवार हो गई और फिर वही पैशाची भोग प्रारंभ हो गया ।

उस समय कुछ 12:30 बजे का समय रहा होगा जब यह क्रिया आरंभ हुई जो तकरीबन 2 घंटे तक चली ।

उसके बाद वह मेरे ऊपर से उठी और जिस स्थान पर उसे लिटाया गया था उसी स्थान पर जाकर पुनः निर्जीव अवस्था में लेट गई ।

मैं काफी देर तक उसके दुबारा उठने की प्रतीक्षा करता रहा ।

लेकिन वह नहीं उठी !

सुबह के करीबन तीन साढ़े तीन बजे का समय रहा होगा ....

मैं उठकर उसके पास गया !

उसको हिला कर देखा !

लेकिन कोई हलचल मौजूद नहीं थी !

डर के मारे मेरे प्राण कांप रहे थे !

बगल में एक बोतल पड़ी हुई थी ....

मैंने वह पूरी की पूरी गले मे उतार ली और वही पसर गया ।

सोच सोच कर परेशान था कि अब क्या होगा ?

समय आगे बढ़ता गया !

लगभग आधे घंटे बाद की बात होगी .....

मैं गहरी नींद या बेहोशी में जा चुका था .....

जब मेरे सर पर एक मटका पानी गिरा.....

वह काला बाबा था जिसने मुझे उठाने के लिए मटकी का पानी मेरे ऊपर पटक दिया था । उसने न सिर्फ पानी मेरे ऊपर डाला बल्कि खाली मटकी भी मेरे ऊपर पटक दी और चिल्लाया - साले तू मेरी लड़की की बारात में आया है क्या ? बाकी का काम कौन करेगा ?

मैं हड़बड़ा कर उठ गया !

मुझे समझ में नहीं आया कि इसके बाद मुझे क्या काम करना है ?

मैं बाबा की ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देखता हुआ बैठा रहा ।

उसने मुझे शव को उठाने का इशारा किया !

हम दोनों ने उठाकर उस शव को चिता के ऊपर लेटा दिया । उस समय सुबह का लगभग चार साढ़े चार बजे का समय होगा । श्मशान में स्थित बाकी सारी चिंताएं लगभग ठंडी हो चुकी थी .....

और हम.....

उस समय चिता को आग लगाने जा रहे थे ।

मुझे समझ में नहीं आया कि इसे चिता देने की क्या आवश्यकता है ?

क्योंकि यह तो नदी में बहता हुआ शव था और हम सारी क्रिया संपन्न करने के बाद उसे वापस नदी में बहा सकते थे .....

लेकिन तांत्रिक की माया तांत्रिक ही जाने !

हो सकता है इसमें भी कुछ रहस्य छुपा हो ।

यही सब विचार करता हुआ मैं वहां खड़ा था और तांत्रिक काला बाबा ने मुझे उस चिता में आग लगाने के लिए कहा ।

चिता में आग लग जाने के बाद उसने मुझे उसके सात चक्कर मरवाए और साथ में कुछ मंत्र जाप भी करता रहा ।

मैंने चिता में जैसे ही आग लगाई .....

वह जलने लगी .....

धीरे-धीरे उसकी लपट बढ़ने लगी थी और मेरे सात फेरे लगाए जाने के बाद उसकी लपटें जैसे आसमान को छूने को आतुर हो गयी .....

चिता धू धू करके जल रही थी ।

आधे घंटे में सारी लकड़ियाँ जलकर खाक हो चुकी थी ..... और साथ ही जल चुका था वह शव ।

सुबह का उजाला फैलते फैलते ऐसा लग रहा था जैसे वह चिता काफी पहले जलकर बुझ चुकी हो ।

सारी क्रिया हो जाने के बाद काला बाबा ने मुझसे आखरी बात कही - पिशाचीनी ने मेरी बात को स्वीकार कर लिया है ।

उसे क्षमा कर दिया है.....

वह ठीक हो जाएगी !

लेकिन आज के बाद तू किसी स्त्री के साथ संभोग करने के लायक नहीं रहेगा ।

यूं समझ ले कि आज से तू नपुंसक हो जाएगा ।

यह किसी पुरुष के लिए कितना बड़ा आघात होता है .....

यह आप समझ सकते हैं ।

खैर .....

शीतल के प्राण बच गए यह सुनकर मुझे बेहद खुशी भी हुई .....
क्योंकि गलती हम दोनों की थी ।
मेरी वजह से उसकी मृत्यु हो जाती तो शायद मैं कभी अपने आप को माफ नहीं कर पाता ।
जो भी हो वो इस पूरे प्रकरण के बाद मैं शीतल के लिए खुश भी था और आने वाले नपुंसकता के बारे में सोच कर दुखी भी.....

मैं स्तंभित खड़ा था !
बाबा मेरी मनोदशा समझ रहा था और बोला - इसके अलावा कोई रास्ता नहीं था । इसलिए इसे स्वीकार कर !
ध्यान रखना यह आखिरी गलती थी !
इसके बाद मुझसे मिलने की कोशिश भी मत करना ।
मैं अब वचन से बंधा हूँ ..... तेरे लिए कुछ भी नहीं कर पाऊँगा ।

काला बाबा ने मुझे नदी में ले जाकर तीन डूबकी लगवाई और मुझे बाहर निकाल कर स्वयं पानी मे उतर गया ।

बाबा ने भी तीन डुबकी लगाई !

लेकिन .....

तीसरी डुबकी के बाद वह बाहर नहीं निकला ।

मैं काफी देर तक नदी के किनारे उसके बाहर निकलने के इंतजार में खड़ा रहा लेकिन वह नदी में गायब हो गया था ।

मुझे लगा कहीं वह डूब तो नहीं गया !

यह सोचकर मैं फिर से नदी में उतरा और डुबकी लगाकर आसपास का पूरा एरिया छान मारा .....

लेकिन दूर दूर तक बाबा का नामोनिशान नहीं था ।

काला बाबा चमत्कारी व्यक्ति है इसलिए वह किस प्रकार की क्रियाएं कर सकता है .....

तो कुछ देर तक वहां खड़े रहने के बाद सुबह लगभग सात बजे वापस डोम के कमरे पर आ गया । डोम उस

समय सो रहा होगा इसलिए मैं उसे उठाना नहीं चाहता था ।

अपनी सफलता की बात भी उसे बताना चाहता था तो मैंने उसके दरवाजे पर ही इंतजार करने का फैसला किया ।

लगभग आठ बजे के आसपास डोम निकल कर बाहर आया ।

मुझे बैठा हुआ देखकर हैरान हुआ उसने मुझसे पूछा - तू कब आया ?

तो मैंने बताया - मैं सुबह से ही बैठा हूं ।

उसने मेरी पीठ पर एक धौल जमाया और कहा - दरवाजा खटखटाया था ?

मैं बोला - नहीं ।

वह मुस्कुराया फिर बोला - तेरा काम हो गया क्या ?

मैंने सहमति में सिर हिलाया । हाथ जोड़कर उसका धन्यवाद किया और उससे जाने की इजाजत मांगी ।

डोम ने एक प्रकार से शीतल और मेरे जीवन को बचाया था । उसने काला बाबा को प्रेरित नहीं किया होता तो वह काला बाबा पक्का फिसल कर निकल गया होता और मेरा काम बिल्कुल नहीं करता । क्योंकि.....

मैंने वादे का उल्लंघन किया था जो साधना के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी गलती मानी जाती है ।

जो भी हो.....

अब सब कुछ अच्छा हो चुका है ।

यह सोच कर मैं वापस अपने कमरे की ओर लौट आया । अपने कमरे में लौट कर और आया और स्नान संपन्न करने के बाद बगल के होटल में खाना खाने को पहुंचा । पूड़ी सब्जी खाने के बाद वहां से मैं सीधा अस्पताल पहुंचा । गूजरमल वहां मौजूद थे उनके चेहरे पर शिकायत के भाव दिखाई दे रहे थे कि मैं अचानक गायब हो गया ।

मैं उन्हें तो कोई भी बात बता नहीं सकता था ।

मैंने पहुंचने पर उससे पूछा - अब तबीयत कैसी है ?

वह बोले - ठीक है .....

मैंने कहा - आप चले जाओ मैं रुकता हूं ।

सेठ - आपकी दुकान का क्या होगा ।

मैं - कोई बात नहीं आज मैंने दुकान बंद रखी है ।

अस्तु

गूजरमल जी चले गए और मैं वहीं पर शीतल के बगल मे कुर्सी लेकर बैठ गया ।

आधे घंटे के बाद उसकी आंखें खुली वह मुझे देखकर अत्यंत प्रसन्न हो गई । मैंने उसकी हथेलियों को अपनी हथेली के बीच दबाया जैसे आश्वस्त किया हो कि तुम ठीक हो जाओगी ।

उसकी नाक पर ऑक्सीजन मास्क लगा हुआ था इसलिए वह कुछ नहीं बोल पा रही थी । मैंने उसे चुप रहने का इशारा किया और सो जाने का संकेत किया ।

तब तक नर्स आ चुकी थी ।

उसने उसकी आंखें खुली देख कर डॉक्टर को बुला लिया ।

डॉक्टर ने चेक किया और उसकी प्रगति पर संतोष जताया और कहा कि अब यह खतरे से बाहर है ।

यह सुनकर मैंने भी राहत की सांस ली ।

नर्स ने फिर उसे एक इंजेक्शन लगाया और वह वापस नींद में चली गई ।

मैं अस्पताल में शाम तक बैठा रहा ।

बीच में दोपहर के समय पास के होटल से भोजन कर आया और साथ में कुछ फल और जूस भी लेकर आया ।

जब मैं अस्पताल में पहुंचा तो शीतल जाग चुकी थी । मैंने उसे जूस पिलाया और कुछ फल काटकर खिलाए । जिसे उसने खा लिया ।

शाम होते होते उसकी हालत काफी अच्छी हो चुकी थी तब तक गुजरमल वापस आ चुके थे ।

उन्हें वहां छोड़कर मैं वापस अपने घर लौट गया ।

लगभग हफ्ते भर के बाद शीतल स्वस्थ होकर वापस घर आ गई ....

तब तक मैं वहां से जाने का मन बना चुका था लेकिन उससे पहले मैं देख लेना चाहता था कि शीतल ठीक हो चुकी है ।

गुजरमल जी को भी मैंने बता दिया था कि मैं अपने गांव जाना चाहता हूं ।

शीतल के स्वस्थ हो जाने के बाद मैंने वापस अपनी ज्योतिष की दुकान खोल ली थी और अब पिशाचीनी के द्वारा संकेत मिलने भी प्रारंभ हो गए थे ।

तो.....

फिर से मेरी दुकान चलने लगी और कुछ दिनों में ही लगभग पंद्रह बीस हजार रुपये जमा हो गए । फिर शनिवार आई और गुर्जरमल फिर गांव चले गए । अब तक शीतल पूरी तरह स्वस्थ हो चुकी थी और मेरे भोजन आदि की व्यवस्था फिर से चालू हो गई थी ।

शनिवार की रात शीतल फिर मेरे कमरे में आई ।

पिशाचीनी के रहस्य को उजागर कर लेने से हुए खतरे को देखते हुए अब मैं कुछ भी बोलना नहीं चाहता था । और जिस प्रकार के हमारे संबंध हो चुके थे उसके बाद बहुत ज्यादा रोक-टोक करने का भी प्रश्न नहीं था । कहीं मन में यह भी जिज्ञासा थी कि क्या वास्तव में नपुंसक हो चुका हूं.....

उसने मेरे साथ सहवास करने का काफी प्रयास किया.....

लेकिन मेरे शरीर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ ।

एक बूंद भर भी बदलाव नहीं आया !

यानी वाकई में मैं नपुंसक हो चुका था ।

यह एक और कीमत थी जो अपनी पिशाचिनी साधना के एवज में मुझे चुकानी पड़ी थी ।
मैं किसी भी स्त्री के साथ संसर्ग करने लायक नहीं रहा था ।
काफी देर तक प्रयास करने के बाद जब असफल रही तो कारण पूछने लगी ..... मैंने अपने होंठ सी लिए कुछ नहीं कहा तो शीतल गुस्सा हो कर चली गई ।
मैं भी निराश होकर सो गया.....
कहीं मन में यह भाव भी था कि अच्छा हुआ जो कुछ नहीं हुआ ..... वरना इस बार पिशाचीनी बिल्कुल नहीं छोड़ती ।

सुबह जब मैं भोजन करने के लिए पास के होटल में गया तो मेरे कानों में पिशाचिनी की आवाज आई । तुझे अपने दोस्त का बदला लेना है तो शाम को गांव की ओर निकल चल ।
शाम को गुजरमल जी वापस लौट आए मैं अपनी सारी पैकिंग कर चुका था और जितना जल्दी से जल्दी हो सके .....
वहां से निकल जाना चाहता था ।

मैंने दोनों से विदा ली और वहां से चल पड़ा ....
वापस अपने गांव की ओर.....
अपने पुराने विश्वासघाती मित्र कादिर का हिसाब किताब करने !!!
कोलकाता पहुंच कर जब मैं स्टेशन पर उतरा तो मुझे घर वापसी जैसा अनुभव हुआ ।
क्योंकि मैं काफी लंबे समय के बाद वापस लौट रहा था ।
जब भी आप बाहर से वापस लौटते हैं तो आपको अत्यंत खुशी की अनुभूति होती है ।
कुछ-कुछ मेरे साथ भी वैसा ही था ।
कोलकाता में उतरने के बाद मैं अपने गांव माना टोला जाना चाहता था, लेकिन पिशाचीनी ने मुझे मना कर दिया । उसने मुझे कुछ दिन कोलकाता में रहने के लिए कहा । उसके निर्देशानुसार मैं एक छोटे होटल में रुक गया ।

पहले मैं क्लीन शेव रहा करता था .....
भारत मे आध्यात्मिक व्यक्ति अगर क्लीन शेव रहे तो उसका प्रभाव कम पड़ता है । इसलिए मैंने दाढ़ी बढ़ाना

चालू कर दिया था । साथ ही अपने बाल भी थोड़े लंबे रखता था ।

वेशभूषा को देखकर लोग बहुत ज्यादा प्रभावित होते हैं इसलिए मैं पैंट शर्ट की जगह धोती कुर्ता पहनता था । जिसमें रेशमी कुर्ता बिल्कुल काले रंग का पहनता था और गले में लाल रंग का एक दुपट्टा लपेट लेता था । माथे पर सुर्ख लाल रंग का तिलक लगाता था । इन सब के बाद मेरा व्यक्तित्व देखकर लोग प्रभावित होने लगते थे.....

बाकी का काम पिशाचिनी कर देती थी ।

मुझे यह समझ में नहीं आया था कि पिशाचिनी ने मुझे होटल में रुकने के लिए क्यों कहा । होटल में रुकने के बाद उसने मुझे अखबार में अपना इश्तेहार देने के लिए कहा ।

मेरा भाई ज्ञानानन्द चट्टोपाध्याय भी वहीं पर ज्योतिष था और काफी ख्यातिप्राप्त भी ..... तो मुझे थोड़ा संकोच हुआ, लेकिन जब उसने डपट कर कहा, तो मुझे अखबार में इश्तहार देने के लिए जाना पड़ा ।

दूसरे दिन से 15 दिनों तक अखबार में इश्तहार आना था । जब मैंने अपने ज्योतिष होने की बात की और विज्ञापन देने के लिए कहा तो अखबार वाला मुझे देख कर मुस्कुराया । उसने मैटर देने के लिए कहा ।
मेरे पास कोई मैटर तो था नहीं तो मैंने उससे कहा कि मेरे पास कोई मैटर नहीं है ।
उसने कहा कि मैटर का चार्ज अलग लगेगा ।
मैंने सहमति में सिर हिला दिया ।
उसने लगभग आठ दस लोगों के विज्ञापन दिखाए जो करीब करीब मिलते जुलते थे ।
मैंने उससे कहा - मैं तुमको सौ रुपये एक्स्ट्रा दूंगा । तुम कुल मिलाकर ऐसा विज्ञापन बनाओ जिसको देखकर लोग मिलने को आए ।
मुझे लगता है कि पेपर मे विज्ञापन देने वाले सारे अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिषी ऐसे ही पेपर वालों के पास अपना विज्ञापन देने जाते समय कहते होंगे ।
उसने आत्मविश्वास के साथ अपना सिर हिलाया और अपने मैटर के निर्माण में लग गया ।
दस मिनट में उसने मुझे मैटर बना कर दिखाया । जिसमें कामाख्या से साधना करके लौटे बंगाली बाबा और

अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिषी से लेकर गारंटीड समाधान तक, सारे आकर्षक शब्दों का इस्तेमाल किया गया था । मैंने उसे फ़ाइनल कर दिया !

इस प्रकार के विज्ञापन आप आजकल अक्सर रेलवे के डिब्बों में चिपके हुए देखते होंगे । यह विज्ञापन आपको मूत्रालय, बस स्टैंड जैसे स्थान पर अवश्य नजर आएंगे, क्योंकि वहां आपके पास समय होता है और आपका दिमाग खाली रहता है । ऐसे में इन चीजों पर ध्यान जाता है और आप उसको पढ़ कर प्रभावित हो सकते हैं ।

इसका एक और तरीका होता है वाल राइटिंग यानि दीवाल पर विज्ञापन !

मुझे अक्सर मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल जाते समय रेलवे लाइन के दोनों तरफ घरों की दीवालों में यह दिखाई देता है ।

उन विज्ञापनों को देख कर ऐसा लगता है जैसे भोपाल में सिर्फ गुप्त रोगी ही भरे हुए हैं । सारी दीवारें सिर्फ गुप्त रोगों का इलाज करने वाले डॉक्टरों के विज्ञापन से भरी होती है ।

बड़े बड़े मोटे मोटे अक्षरों में .....
स्वप्नदोष से लेकर अंग की निर्बलता तक.....
और तमाम तरह के गुप्त रोगों के इलाज की गारंटी दी जाती है .....
खैर .....
मेरा विज्ञापन डल चुका था जिसमें बंगाली तांत्रिक ज्योतिषी महानन्द बाबा ..... यानि..... मुझसे मिलने का पता होटल का कमरा नंबर 24 था ।
अगले दिन से मेरी दुकान वहाँ भी चालू हो गई थी । रोज कम से कम 25-30 लोग मिलने आते और पिशाचिनी की कृपा से शाम होते होते दो तीन हजार रुपये हाथ में आ जाते थे ।

चौथे दिन दोपहर के लगभग 12 बजे होंगे जब एक महिला जो वेशभूषा से गरीब घर की लग रही थी सकुचाते हुए आई । उसके कमरे में प्रवेश करते ही मुझे लगा कि कोई सामान्य महिला होगी लेकिन पिशाचीनी ने मेरे कान में कहा - सावधान यह महिला जो आ रही है , वह एक बड़े कपड़ा व्यापारी दत्तात्रेय दासगुप्ता के यहां काम करती है । इसके हाथ में एक बच्चे मोनु

की फोटो है । जो उस व्यापारी का बच्चा है । उसका अपहरण कर लिया गया है । व्यापारी को ज्योतिष पर विश्वास नहीं है, लेकिन उसकी पत्नी को विश्वास है । यह उसकी विश्वास पात्र नौकरानी मूँगी है । सेठानी नीचे कार में बैठी है और उसने इसे तेरे पास भेजा है ।

मैंने पूछा - वह बच्चा कहां है ?
पिशाचिनी - घर के पुराने नौकर ने उसे उठा लिया है और अपने गाँव के घर मे ले जाकर रखा है । उसका नाम जगराज है बाकी तू देख ले ।

अब तक लोगों को देखते देखते मुझे समझ में आ गया था कि किस से किस प्रकार का व्यवहार करना है । उसके कमरे में प्रवेश करते ही यह सारी बातें मेरे कानों में गूंज उठी थी मैंने उसे बैठने का इशारा किया और फिर अपनी बनावटी ध्यान मुद्रा में चला गया ।
मैंने एक जोर का अट्टहास किया और अपनी आंखें खोल दी .....
मेरा अट्टहास सुनकर वह महिला घबरा गई ।
जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था कि फिल्मों में देख देखकर हमारी आदत ऐसी हो गई है कि हम

अजीबोगरीब हरकत करने वालों को ही सिद्ध पुरुष मानने लगते हैं जबकि ऐसा होना जरूरी नहीं है ।

मैं जोर से बोला - बोल मूँगी ! कैसे आई ?
तू बताएगी या मैं बताऊं ?
मेरे मुंह से अपना नाम सुनकर आश्चर्य से उसका मुंह फटा का फटा रह गया !

उसके मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी ।

उसकी दशा देखकर मैं आनंदित हो रहा था ।
उसने बड़ी मुश्किल से अपने हाथ मे रखे फोटो को मेरे सामने रखा !
मैंने कहा - मोनू जिंदा है । मिल जाएगा !

इतना सुनते ही वह मेरे कदमों में लोट गई ।
बोली - बाबा मोनू छोटा सा है .... पता नहीं कैसा होगा ?
कैसे भी उसे वापस दिलवा दो ।

मैंने कहा - मिल जाएगा । जिसका बच्चा है वह आकर बोलेगी ..... तो मिल जाएगा । बाबा सब दिला देगा ..... जा उसको बोल मैंने बुलाया है ।

वह सर पर पांव रखकर भागी .....

दूसरा ग्राहक आ चुका था । मैं उससे बातचीत करने लगा । उससे बातचीत करते करते दो-चार मिनट हुए होंगे , तभी दरवाजा फटाक से खुला और रेशमी बनारसी साड़ी पहने हुए सोने के आभूषणों से लदी हुई एक गरिमामई महिला आकर मेरे कदमों में लेट गई । मैं समझ गया कि यह सेठानी है ।

मैंने उसके सर पर अपना हाथ रख दिया और बोला - बच्चा तेरा है और ढूंढने के लिए नौकरानी को भेजती है ?

वह बोली - माफ कर दो बाबा । आज सुबह से पंद्रह बाबाओं के पास जा चुकी हूं । सब लंबी लंबी हाँकते हैं , पैसा लेने को मचलते रहते हैं । इसलिए पहले मूँगी को भेजती, ताकि वह समझे कि मामूली घर का बच्चा है .....

लेकिन कोई भी यह नहीं समझ पाया कि बच्चा मूँगी का नहीं है .....
आप पहले हो जिसने यह भाँप लिया ।
अब आप ही कुछ करो । दो दिन से पुलिस वाले भी बच्चे को ढूंढ नहीं पा रहे हैं ।

मैंने कहा - तेरा बच्चा शाम तक तुझे मिल जाएगा ।
जब बच्चा मिल जाए तब मेरी दक्षिणा दे देना ।
उसने खुशी से सिर हिलाया ।
मैं - बोल क्या देगी ?
सेठानी - आप जो मांगोगे बाबा ।
इतना कह कर वो फिर से मेरे चरणों में गिर गई । उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी । जिसे देखकर मैं भी विचलित हुआ जा रहा था ।

मैंने उससे कहा - तेरे घर में कोई पुराना नौकर है, जिसने अभी हाल में नौकरी छोड़ी हो ।

वह बोली - हां बाबा ! जुगराज ! उसकी मां की तबीयत खराब है, इसलिए वह एक महीने पहले गांव चला गया है ।

मैंने कहा - जा..... उसके गांव चली जा । बच्चा तुझे मिल जाएगा ..... लेकिन ध्यान रखना ! चुपके से जाना ! तभी बच्चा तुझे सुरक्षित मिलेगा । पुलिस को लेकर मत जाना । अपने दो चार आदमियों को ले ले और एक गाड़ी में चुपके से उसके घर पहुंच जा ..... बच्चा तुझे मिल जाएगा।

मैंने उसे जाने का इशारा किया और वह चली गई।
रोज की तरह उस दिन भी दो हजार से ज्यादा की कमाई हो चुकी थी और मैं खुश था कि आज का दिन भी अच्छा गुजरा .....
लेकिन मुझे पता नहीं था कि एक बंपर लॉटरी लगने वाली थी ।

शाम के पाँच बजे तक ही मैं लोगों से मिलता था । उसके बाद मेरा आराम करने का टाइम होता था । शाम के लगभग सात बजे होंगे जब मेरे दरवाजे पर दस्तक हुई । मैं बिस्तर पर पड़ा पड़ा हुआ था । बड़े अनमने ढंग से उठा और दरवाजा खोल दिया । सामने होटल का मालिक खड़ा था !

उसके साथ सजीले वस्त्रों मे एक आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी सुबह वाली महिला के साथ खड़ा हुआ था। मैं समझ गया कि यही दत्तात्रेय सेठ है। उनके हाथ में 7 साल का मोनू मौजूद था, यानी वह मिल चुका था। मुझे देखते ही दत्तात्रेय सेठ की पत्नी मेरे चरणों में गिर गई और उनके साथ दत्तात्रेय सेठ ने भी मुझे हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

होटल का मालिक आश्चर्य से मेरी ओर देख रहा था। वह मुझे उसके यहां आने वाले छुटभैया ज्योतिषियों जैसा ही समझता था, लेकिन इतने बड़े सेठ को मेरे सामने झुकते हुए देखकर वह भी बुरी तरह प्रभावित हो चुका था। वह सेठ सेठानी को मेरे कमरे मे छोडकर चला गया।

इधर उधर की बातें हुई और सेठ ने एक छोटा ब्रीफकेस मेरे सामने रख दिया और बोला - आपका बहुत-बहुत आभार ! यह मेरा इकलौता बच्चा है। एक छोटी सी भेंट है .... स्वीकार करें।

अपने अनुभवों के आधार पर मैं यह समझ चुका था कि राजा अर्थात बड़े धनवान के पास जाने से कभी भी अपने

हिसाब से धन नहीं मांगना चाहिए क्योंकि राजा की सोच हमारी सोच से बड़ी होती है और वह छोटा से छोटा भी जो देगा वह हमारी बड़ी से बड़ी अपेक्षा से बड़ा ही होगा । इसलिए मैंने उससे फीस की मांग नहीं की थी । जिसका प्रतिफल मुझे अब मिलने वाला था ।
मैंने उस ब्रीफकेस को उठाकर अपनी गद्दी के पास रख लिया । उन्होंने मुझसे अपने घर में पधारने की प्रार्थना की जिसे मैंने स्वीकार कर लिया और फिर वे दोनों चले गए ।

उनके जाते ही मैंने दरवाजा बंद किया और ब्रीफ़केस पर टूट पड़ा । झटपट झटपट मैंने उसे खोल कर देखा और दंग रह गया उसके अंदर 50 रुपए की 20 गड्डियाँ पड़ी हुई थी ....
यानि एक लाख रुपये .....
मैंने मन ही मन पिशाचिनी को धन्यवाद दिया और अलमारी के अंदर ब्रीफ़केस रख दिया ।

तभी दोबारा से दरवाजे पर दस्तक हुई ।
मैंने फिर उठकर दरवाजा खुला सामने होटल का मालिक खड़ा हुआ था ।

वह मेरे पैरों को छूने लगा ।

मैंने उसे पकड़ कर उठाया ।

वह बोला - मेरे होटल में इतना बड़ा ज्योतिष रह रहा है ..... मुझे पता भी नहीं था । महाराज ! मुझे माफ कर दो ।

आप जब तक चाहो यहां रह सकते हो । दत्तात्रेय सेठ ने आप का एक महीने का किराया भर दिया है और मुझसे कहा है कि जब तक आप यहां रहना चाहे तब तक का किराया और खाने पीने का खर्चा वही देंगे ....

अब आश्चर्यचकित होने की बारी मेरी थी । यानी मेरा रहना खाना सब मुफ्त होने वाला था ।

उस रात पिशाचीनी आई ।

अब मुझे इन सबकी कीमत चुकानी थी ।

उसका पैशाचिक संभोग प्रारंभ हुआ ।

वह मुझ पर टूट पड़ी । इसके दौरान उसकी तीव्रता इतनी ज्यादा बढ़ जाती थी कि मुझे कभी-कभी ऐसा लगता था कि उसके अंदर किसी जानवर का प्रवेश हो गया है ।

उस बलात्कार को भोगना मेरी नियति बन चुका था ।
जिसे मैंने स्वयं स्वीकार किया था ।
या यूं कह लीजिए कि जानबूझकर मधुमक्खी के छत्ते में अपना हाथ डाल दिया था । अब मुझे यह सब सहन करना ही था ।
दो घंटे तक वह मुझे भोगती रही । मुझे फिर ऐसा लगा जैसे मेरे अंदर से सब कुछ निकल गया हो । पस्त हालत मे मैं बिस्तर पर पड़ा रहा !
अगले दिन सुबह शौच के समय खून निकलने लगा !
यह देखकर मैं घबरा गया !
उस दिन इतना खून निकला कि मेरी धोती भी लाल हो गई !
काफी दर्द हो रहा था....
कपड़े की पट्टी बांध कर मैं डॉक्टर को दिखाने के लिए गया ।
उसने गुदा मार्ग की जांच के बाद बताया कि कोई दिक्कत दिखाई नहीं दे रही है । मल के कड़ा हो जाने की वजह से ऐसा हो सकता है । उसने कुछ विरेचक औषधियां मुझे दी जिससे शौच जाने में आसानी हो ।

उन्हें लेकर मैं वापस आ गया । तब तक खून का बहना भी बंद हो चुका था ।

मेरी हालत काफी खराब थी जिसे देखते हुए मैंने उस दिन सभी ग्राहकों को लौटा दिया । अगले दिन से शौच में खून आना बंद हो गया !

मुझे लगा कि यह भी संभव है कि पिशाचिनी के संभोग की वजह से वह खून निकला हो ।

जो भी हो .... मन में भय की उत्पत्ति हो चुकी थी और लगने लगा था कि जरूर मेरे शरीर के अंदर कहीं ना कहीं से खून बह रहा है ।

जो वास्तव में एक खतरनाक स्थिति थी ।

जिस रास्ते पर मैं बढ़ चुका था , वहां इस प्रकार की परिस्थितियां बनना स्वाभाविक था क्योंकि आखिर वह एक पिशाचीनी थी .....

जो धीरे धीरे मुझे अंदर से खोखला कर रही थी !

आठवें दिन गाँव का मेरा दूसरा खास सेवक भवानी मुझसे मिलने आया । यह मेरा विश्वास पात्र सेवक था, लेकिन कादिर के कहने पर मैंने इसे भी निकाल दिया था ।

मैं उसे पहचान गया लेकिन वह मुझे नहीं पहचान पाया ।

वह अपनी बेटी के विषय में जानकारी लेने के लिए आया था ।

मैंने पिशाचीनी से उसके विषय में पूछा तो जो उसने बताया वह बेहद दुखद था । कादिर और उसके आदमियों ने मिलकर उसकी लड़की का बलात्कार करके हत्या कर दी थी और उसे पत्थर बांधकर नदी मे डाल दिया था ।

मैंने भवानी को सब कुछ सच-सच बता दिया । जिसे सुनकर वह बुरी तरह रोने लगा और बोला कि मेरे जीने का सहारा मुझसे छिन गया ।

पिशाचीनी की आवाज मेरे कानों मे आई - यह तेरे काम आएगा । इसे अपनी असलियत बता ।

जब मैंने उसे बताया कि मैं महानंद हूँ तो वह मेरे पैर पकड़ कर रोने लगा ।

मेरी आंखों से भी आंसू आने लगे ।

मुझे अपनी गलती पर पछतावा होने लगा कि मैंने सच्चे और अच्छे लोगों को एक झूठे मक्कार आदमी के कहने

पर नौकरी से निकाल दिया था और उस गलती की सजा घर से बेघर होकर भुगत रहा था ।

कभी भी आदमी को कान का कच्चा नहीं होना चाहिए । अगर आप सुनी सुनाई बातों पर विश्वास करते हैं तो इस बात की पूरी संभावना है कि आप गलत निर्णय ले ले।

मेरे साथ भी वही हुआ था ।

सबसे पहले मैंने अपने विश्वासपात्र मुंशी को हटाया ।

जिसकी वजह से एक ऐसी स्थिति बन गई, जहां पर मुझे गलत गलत हिसाब किताब मिलना चालू हो गया । फिर धीरे-धीरे कादिर ने मेरे विश्वास पात्र लोगों को मुझसे दूर करना चालू कर दिया । आखिर में मैं अकेला रह गया ।

जिसे वह बड़ी आसानी से निपटा सकता था । उसने वही किया .....

वह तो भगवत कृपा थी जिसकी वजह से मैं बच गया .....

अन्यथा उसने मार डालने का तो पूरा प्रयास किया था ।

खैर .....

मैंने उसे पूरा किस्सा सुनाने के लिए कहा ।

भवानी बोला - मालिक आपके जाने के बाद कादिर आपकी जगह पर बैठ गया और मैं उसके यहां काम करने लगा । एक दिन उसने अपने यहां काम करने के लिए एक लड़की की जरूरत बताई मैंने अपनी बेटी लक्ष्मी को वहां लगा दिया। और वही मेरी सबसे बड़ी गलती थी।

इसके लगभग दो हफ्ते के बाद लक्ष्मी काम पर गई लेकिन वापस नहीं आई .....

शाम हो गई तो मैं उसे तलाश करने के लिए हवेली पर गया.....

वहां कादिर के लोगों ने मुझे बताया कि लक्ष्मी दोपहर में ही चली गई थी ।

मैं वापस लौट आया .....

पूरे गांव में मैंने उसे तलाश करने की कोशिश की लेकिन वह कहीं नहीं मिली !

आखिर मैंने पुलिस में कंप्लेंट लिखवा दी।

अगले दिन पुलिस वाले आए और कादिर ने उनकी अच्छी खातिरदारी की .....

जिसके बाद वह मुझे उठा कर ले गए और थाने में मेरी खूब पिटाई की !

साथ ही यह भी कहा कि बड़े आदमी का नाम बदनाम करने की कोशिश करेगा तो जेल में सड़ा देंगे।

तेरी लड़की किसी के साथ भाग गई होगी इसमें सेठ की क्या गलती है ?

अगर दोबारा उसका नाम लिया तो तेरी जुबान काट देंगे .....

इस प्रकार की ढेर सारी धमकियां उन लोगों ने मुझे दी और हफ्ते भर मुझे थाने में बंद करके बुरी तरह से पीटा । मैं समझ गया कि गरीब आदमी का कोई सहारा नहीं होता । मैं बदला लेने का इंतजार कर रहा हूं लेकिन कुछ कर नहीं पा रहा क्योंकि उसके गुंडों के सामने मैं बेहद कमजोर हूँ ।

उसकी बात सुनकर मेरी आंखें भी भीग गई ।

भवानी आगे बोला - मूंगी मेरी चचेरी बहन है । मैं उसी के पास रहकर यहां छोटा-मोटा काम करता रहता हूं । उसने मुझे आपके बारे में बताया था इसलिए मैं सच्चाई जानने के लिए आ गया था ।

आपके साथ जो हुआ वह देख कर मेरा दिल फटा जा रहा था लेकिन मैं कुछ भी नहीं कर पा रहा था ।
अब आप वापस आ गए हो तो उस कादिर को उसकी गलतियों की सजा जरूर देना ।

मैंने कहा - भवानी ! मुझे तेरी मदद की जरूरत पड़ेगी ।
भवानी बोला - उस कमीने को सजा देने के लिए आप जो बोलोगे वह मैं करूंगा ।
मैंने उसे अगले दिन आने के लिए कहा ।

दूसरे दिन शाम को हम दोनों पिशाचिनी के निर्देशानुसार गांव के लिए निकल पड़े। रात गांव पहुंचने के बाद मैं भवानी की झोपड़ी में ठहर गया । मैंने अपनी वेशभूषा बदल दी थी और एक मजदूर की वेशभूषा में आ गया था ।
देर रात मैं अकेला पिशाचिनी के निर्देशानुसार हवेली की ओर बढ़ गया ।
मुझे डर लग रहा था .....
लेकिन पिशाचीनी के होने का संबल भी था !
तो मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया ।

पिशाचिनी बड़ी आसानी से दूसरों के मस्तिष्क पर नियंत्रण कर लेती थी । इसलिए मुझे विश्वास था कि उस के निर्देशानुसार काम करने पर कोई गड़बड़ नहीं होने वाली है .....

हवेली के दरवाजे पर दो लोग खड़े थे ।

पिशाचीनी ने मुझे रुकने का इशारा किया ।

थोड़ी देर में अचानक दोनों पेशाब करने के लिए चल दिए और मैं धीरे से हवेली के अंदर दाखिल हो गया .....

मेरी हवेली थी !

इसलिए सब कुछ मुझे मालूम था कि क्या चीज कहां है .....

पीछे की तरफ एक खिड़की थी । जहां से बड़ी आसानी से अंदर घुसा जा सकता था । मैं वहीं से अंदर घुस गया । अंदर सारे लोग सोए हुए थे । मैं चुपचाप चलता हुआ ऊपर की मंजिल पर पहुंचा .....

जहां मेरा शाही बेडरूम था ।

वह बेडरूम जहां पर मैंने किसी राजकुमार की तरह जीवन व्यतीत किया था और सभी प्रकार के भोग भोगे थे ।

शराब !

शबाब !!

कबाब !!!

सब कुछ.....

वह बेडरूम अब कादिर के कब्जे में था ।

दरवाजा खुला हुआ था और कादिर नशे में धुत अपने बिस्तर पर पड़ा हुआ था ।

मैं कुर्सी खींचकर उसके बगल में जाकर बैठ गया। मैंने तभी पिशाचिनी को सूक्ष्म रूप में वहां प्रकट होते हुए देखा !

एक तकिया उड़ता हुआ कादिर के मुंह पर जाकर फिट हो गया । ऐसा लग रहा था जैसे कोई तकिये को उसके मुंह में दबा रहा हो .....

उसके बाद कादिर के ऊपर लात घूंसों की बरसात होने लगी। लगभग 10 मिनट की उस धुलाई के बाद कादिर के होश ठिकाने आ चुके थे .....

वह हाथ जोड़कर रहम की भीख मांग रहा था । तकिया उसके चेहरे से हटा और उसने मुझे वहां बैठे हुए देखा । मुझे देखते ही वह मुझे पहचान गया और अपनी चालाकी का परिचय देते हुए मेरे पांव पकड़ने लगा और बोला - मालिक माफ करो । मैं यहां से चला जाऊंगा ।

मैंने उसे सारे कागजात लेकर आने के लिए कहा । पिशाचिनी ने उसे नियंत्रण मे लिया हुआ था । थोड़ी देर में वह सब कुछ लेकर आ गया ।
मैंने पेपर का निरीक्षण किया तो मुझे पता चला कि अभी तक कोई भी चीज उसके नाम से ट्रांसफर नहीं हुई थी ..... केवल पावर ऑफ अटॉर्नी के आधार पर वह मालिक बना हुआ था । फिर भी किसी वकील से मिलकर इसकी तस्दीक कर लेना बेहतर था ।

पिशाचिनी ने कादिर के मस्तिष्क पर नियंत्रण कर लिया था और अब वह वही कर रहा था जो मेरे अनुकूल था । पिशाचिनी ने मुझे वापस चलने का आदेश दिया । सारे कागजात लेकर मैं वापस भवानी के घर लौट आया और सुबह सुबह शहर लौट गया ।

वहां पिशाचिनी के निर्देशानुसार एक अच्छे वकील शंकर दत्ता से मिला और उसे सारे कागजात दिखाए तथा कहानी बताई । उसने सारे कागजात को कानूनी नजर से देखा और मुझसे फीस में पाँच हजार की मांग की और कहा - मैं , आप का कब्जा वापस दिला दूंगा । वकील की एक खासियत होती है कि वह कभी भी अपने क्लाइंट को यह नहीं कहता कि उसका काम नहीं होगा । उदाहरण के लिए अगर कोई पत्नी अपने पति से परेशान हो और उससे तलाक चाहती हो..... या पति पत्नी से परेशान हो और तलाक चाहता हो..... और किसी वकील के पास पहुंच जाए तो उसका जवाब यही रहेगा कि ..... बिलकुल यूं .... हो जाएगा । अब यह एक अलग बात है कि सारी कानूनी प्रक्रिया और पचड़ों से निकलते निकलते कम से कम दो-तीन साल लग ही जाते हैं ।

इसलिए उसकी बात पर मुझे विश्वास नहीं हुआ ।

मैंने पिशाचिनी से मानसिक प्रश्न किया और उसने सहमति प्रदान कर दी ।

मैंने भी वकील को एडवांस के दो हजार दे दिए ।

वकील ने जायदाद के कागजात रिकार्ड से निकाले और उसके अनुसार सारी संपत्ति अभी भी मेरे नाम से थी ।
माँ की मृत्यु के बाद एकमात्र नॉमिनी होने की वजह से मुंशी जी ने सब कुछ मेरे नाम से करवा दिया था .....
वकील शंकर दत्ता काफी जुगाड़ू किस्म का था । उसने मेरे सामने एक सुझाव रखा है ।
बोला - कोर्ट में केस करके उसे बाहर निकालने में समय लगेगा ..... पैसा भी लगेगा.....
अगर आप चाहो तो हम पुलिस वालों की मदद ले सकते हैं !
लेकिन इसमें थोड़ा खर्चा आएगा ।
कोई ऐसा केस आपकी जानकारी में हो जिसमें इसका इंवॉल्वमेंट हो तो हम उसे उस केस में फंसा कर अंदर करवा सकते हैं ।

यह बात मुझे जम रही थी .....

मैंने उससे पूछा - कितना खर्चा आएगा ?
वकील ने जवाब दिया - लगभग बीस हजार ।
वह एक काफी बड़ी रकम थी !

मैंने पिशाचिनी से मानसिक रूप से प्रश्न किया और अनुकूल जवाब आने पर उसके लिए सहमत हो गया । भवानी की बेटी का केस तो मुझे मालूम ही था तो मैंने उसके विषय में वकील को बता दिया ।
वकील सारी बात सुनकर प्रसन्न हो गया और मेरे हाथ को पकड़ कर उसने कहा - आप निश्चिंत रहें दादा ! यूं समझ लीजिए कि 15 दिन में उस घर में आप रहेंगे ! उस चांडाल को बाहर निकालने के लिए इतना काफी है । मुझे उसकी बात पर पूरा विश्वास नहीं हुआ ... लेकिन पिशाचिनी की क्षमता से मैं वाकिफ था और मैंने बीस हजार और दे दिये ।

पुलिस में भ्रष्टाचार प्राचीन काल से चला आ रहा है । जो अब भी बदस्तूर जारी है । इसका नवीनतम उदाहरण महाराष्ट्र में एक पुलिस अधिकारी द्वारा 100 करोड रुपए की वसूली वाले प्रकरण में आप लोगों ने देखा ही होगा । इसलिए मुझे विश्वास था कि पैसा दे देने पर मेरा काम अवश्य हो जाएगा ।

वकील शंकर दत्ता ने एक उच्च अधिकारी से संपर्क किया और सारा मामला सेट कर दिया ।

वकील भवानी को लेकर उसी पुलिस थाने में पहुंचा, जिस थाने में भवानी ने शिकायत दर्ज कराई थी । भवानी को देखकर थानेदार फिर भड़क गया । लेकिन साथ में वकील को देखकर उसके तेवर थोड़े ठंडे पड़ गए । पुलिस वाले दो प्रजातियों से थोड़ा खौफ खाते हैं और उनसे टकराव से बचने की कोशिश करते हैं इसमें से पहला है वकील और दूसरा है पत्रकार ।

वकील ने कानूनी भाषा में बात करना चालू किया तो थानेदार को भी समझ में आ गया कि मामला उलझने वाला है । उसने अपने चेले को कादिर के पास खबर करने के लिए भिजवा दिया ।
थानेदार द्वारा एफ आई आर करने में आनाकानी करने की वजह से वकील ने उस अधिकारी को फोन लगा दिया और रिसीवर थानेदार के हाथ में थमा दिया । उधर से पुलिसिया अंदाज में गोलाबारी चालू हो गई और 15 मिनट के बाद थानेदार स्वयं भवानी की एफ आई आर लिख रहा था और उसमें वह सारी धाराएं डाल रहा था जो वकील उसे समझा रहा था ।

आमतौर पर भारत में अपराधी कोर्ट से बरी हो जाते हैं .....

उसकी एक बड़ी वजह यह भी है कि उन पर अधिकांशतः जमानती धाराएं लगाई जाती है । कई बार चार्ज शीट दाखिल ना होने की वजह से अपराधी छूट जाते हैं ।

हमारे एल एल बी क्लास मे एक विद्वान वकील का यह कहना था कि अगर पुलिस के द्वारा प्रस्तुत की गई चार्जशीट और सबूत पुख्ता हो तो किसी भी अपराधी का कोर्ट से बरी हो जाना असंभव नहीं तो काफी मुश्किल होता है ..... खैर .....

जो भी हो एफ आई आर दर्ज हो चुकी थी और कादिर के पास खबर भी पहुंच चुकी थी । कादिर के पास से पेपर मैं पहले ही उठा लाया था इसलिए कादिर को समझ में आ गया था कि अब पार पाना इतना आसान नहीं होगा ।

उसे खबर पहुंचाने गया खबरी जब निकला था .....
तब उसे पता नहीं था कि ऊपर के अधिकारी का फोन थानेदार के पास आ चुका है ।
वह कादिर को खबर देने के एवज में हवेली पर बैठ कर नाश्ता उड़ा रहा था । जब थानेदार पुलिस गाड़ी लेकर हवेली पहुंच गया । उसने ठेठ पुलिसिया अंदाज में कादिर और उसके चमचों को गाड़ी में डाला और थाने में लाकर बंद कर दिया ।
बड़े साहब का हुकुम हो तो पुलिस वालों की इतनी क्षमता होती है कि वह गलती न करने वालों से भी जुर्म कबूल करवा लेते हैं और यहां तो स्वयं अपराधी मौजूद था ।
एक हफ्ते तक थाने में सभी की विशेष खातिरदारी हुई और उसे देखने के लिए मैं और भवानी भी दिन में एक बार चले जाया करते .....
हम अब बड़े साहब के पहचान वाले हो चुके थे इसलिए थाने में पहुंचते ही विशेष आवभगत होती और हमें दिखाने के लिए उन लोगों की ज्यादा जोरदार खातिरदारी होती !

भवानी को उन्हें देखकर बड़ा आत्मिक संतोष मिलता । उसे ऐसा लगता कि आखिरकार उसकी बेटी के अपराधियों को सजा मिल रही है । वह उनकी पिटाई देख कर बड़ा खुश होता ।

जैसा कि स्वाभाविक था कादिर और साथियों ने जुर्म कबूल कर लिया और उसे और उसके साथियों को जेल भेज दिया गया ।

पंद्रह दिनों के बाद मैं अपनी हवेली पर ठेठ मालिकाना अंदाज में बैठा हुआ था !
अपनी उस हवेली में जहां मेरा बचपन बीता था !
जिसे मेरी मां ने सजाया संवारा था !
और जहां मैंने अपनी जवानी की अठखेलियां खेली थी ....
पिशाचिनी की कृपा और मार्गदर्शन से अब मैं वापस उस जायदाद का हकदार हो चुका था ।
भवानी मेरा खास सेवक बन गया था और मुंशी जी को भी वह बड़ी मुश्किल से ढूंढ कर ले आया था । दोनों ने पूरा काम संभाल लिया था ।

समय चक्र धीरे-धीरे घूमता रहा !

अब आधा समय मैं गांव में रहता और महीने के 15 दिन कोलकाता में ।

मैंने होटल छोड़ दिया था ।

दत्तात्रेय सेठ जी ने मेरे लिए एक दुकान की व्यवस्था करवा दी थी जिसमे दो कमरे रहने के लिए भी थे । मैं उसी में रहता था.....

धीरे धीरे त्रिकालज्ञ ज्योतिष के रूप मे मेरा नाम होने लगा था ।

भविष्य को देख पाना किसी के लिए संभव नहीं है .... लेकिन भूतकाल की घटनाओं के बारे में हर कोई जानता है । जब कोई व्यक्ति भूतकाल के विषय में सही और सटीक जानकारी देने लगता है तो लोगों का ऐसा लगता है कि यह तीनों काल के विषय में जानता है.....

यह त्रिकालज्ञ है !

यह सिद्ध है !!

फिर उसके पास भीड़ लगने लग जाती है ।

मेरे साथ भी कुछ-कुछ वैसा ही हो रहा था ।

मैं अपनी असलियत को जानता था लेकिन त्रिकालज्ञ कहलाने का आनंद कुछ अलग ही होता है !

मैं उस आनंद को अनुभव करता हुआ अब अपने जीवन को पिशाचीनी की कृपा से धन्य महसूस कर रहा था ।
लेकिन.....
पिशाचीनी का पैशाचिक भोग मेरे प्राण को और मेरे शरीर को निरंतर कमजोर भी कर रहा था ।

मुंशी और भवानी दोनों अब मेरे विवाह को लेकर चिंता करने लगे थे । वे इस बारे में मुझसे कई बार बात करने की कोशिश भी करते थे , मैं टाल जाता था ।
दरअसल मै अपनी स्थिति जानता था !
मेरा शरीर केवल पिशाचिनी के सहवास के समय उत्तेजित होता था .....
बाकी समय वह पूरी तरह से बेकार रहता था .....
किसी भी प्रकार की कोई उत्तेजना मुझे महसूस नहीं होती थी ।
एक प्रकार से मैं नपुंसक हो चुका था और किसी स्त्री का जीवन खराब नहीं करना चाहता था .....
पिशाचीनी की चेतावनी और उसका डर भी इसकी एक महत्वपूर्ण वजह थी ।

बड़ी मुश्किल से काला बाबा ने मुझे और शीतल को बचाया था । साथ ही चेतावनी भी दे दी थी कि दोबारा वे मुझे बचाने भी नहीं आएंगे । ऐसी स्थिति में एक गलती मुझे वापस मृत्यु के मुख में डाल सकती थी । पिशाचिनी के क्रोध के बाद उसकी पिटाई की याद मुझे ऐसी किसी भी हरकत को करने से रोक लेती थी ।

एक ज्योतिषी थे । गणनाओं के क्षेत्र में उन्होंने काफी काम किया । साधनाएं भी करते रहते थे । इसलिए धीरे-धीरे उन्हें कुंडली के माध्यम से बेहद सटीक भविष्यफल बताने की क्षमता प्राप्त होने लगी ।
उन की भविष्यवाणियां पत्थर की लकीर होती । अगर वह कह देते कि 18 वर्ष की आयु में जातक की मृत्यु हो जाएगी तो यह निश्चित होता कि वह 19 वां जन्मदिन नहीं देख पाएगा ।
कुंडली देखते ही जातक का भविष्य उनके सामने किसी चलचित्र की तरह स्पष्ट हो जाता है ।
यहां तक तो बात ठीक थी.....
लेकिन.....

एक दिन उन्होंने अपनी युवा पुत्री की कुंडली देखने की सोची ।

बचपन में वे उसकी कुंडली देख चुके थे !

उस समय उनकी गणनात्मक क्षमता और भविष्य दृष्टि इतनी स्पष्ट नहीं थी तो उन्हें बहुत सारी बातें पता नहीं चली थी ।

बेटी इकलौती थी और वे उससे बहुत प्यार करते थे !

एक तरह से वह उनकी जिंदगी थी !

जब उन्होंने उसकी कुंडली देखी तो उसका भविष्य देख कर उनके ऊपर वज्रपात सा हो गया ।

ठीक तीन महीने के बाद उसकी मृत्यु निश्चित रूप से होने वाली थी.....

पहले तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ !

अच्छी खासी स्वस्थ तंदुरुस्त लड़की अचानक कैसे मृत्यु को प्राप्त हो जाएगी ?

यह बात उन्हें स्वीकार नहीं हो पा रही थी लेकिन अंदर से वह भी जानते थे की गणना के आधार पर जो दिख रहा है वह यही है ।

उन्होंने कुंडली को बार बार देखा अपने पास रखे हुए सारे ग्रंथ खंगाल डाले और हर बार रिजल्ट वही आया ।

इस बात को स्वीकार करते करते लगभग महीना भर गुजर चुका था ।

प्यारी बिटिया के जाने की बात सोच सोच कर ज्योतिष महोदय विचलित हुए जा रहे थे ।

पत्नी का देहांत पहले ही हो चुका था और बिटिया ही उनके जीवन का सहारा थी ।

बिटिया की उम्र 21 साल हो चुकी थी !

इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही थी !

ज्योतिष महोदय का विचार था कि इंजीनियरिंग पूरा हो जाने के बाद पूरे धूमधाम से उसकी शादी करवा कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेंगे.....

और उसके बाद पूरा समय ज्योतिष को देंगे ।

लेकिन.....

विधाता के लेख को कौन बदल सकता है ?

समय चक्र आगे चलता रहा.....

दो महीने के बाद अचानक बच्ची को धूप से वापस लौटने पर कमजोरी सी महसूस होने लगी । गर्मी का मौसम था और लू चल रही थी । 45 डिग्री के ऊपर पारा अपना तांडव कर रहा था ।

ऐसा लगा कि उसे लू लग गई होगी ।
जब दो-तीन दिन तक बुखार नहीं उतरा तो अस्पताल में भर्ती कराया गया ।
डॉक्टर पहचान का और काफी अनुभवी व्यक्ति था । उसे युवती की अवस्था को देखते हुए किसी गंभीर बीमारी का संकेत लगा और उन्होंने ज्योतिष महोदय को सीधे मुंबई के टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल ले जाने का सुझाव दे दिया ।

आप भी जानते होंगे कि टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल कैंसर के इलाज के लिए भारत का सर्वश्रेष्ठ अस्पताल माना जाता है ।
उसका नाम सुनते ही ज्योतिष महोदय समझ गए कि गणना गलत नहीं ठीक है .....
तब भी जो प्रयास करना है वह तो करना ही चाहिए ।
उनके मन में यह भी विचार था कि विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान की नवीनतम तकनीक से हो सकता है बच्ची की जान बच जाए.....

वे उसे लेकर टाटा मेमोरियल चले गए । डॉक्टरों ने परीक्षण निरीक्षण किया और बताया कि बच्ची को चौथी स्टेज का ब्लड कैंसर हो चुका था .....
युवा शरीर की वजह से किसी प्रकार के लक्षण दिखाई नहीं दिए थे और सीधे चौथे चरण में आ जाने के बाद लक्षण आने प्रारंभ हो गए थे ।

डॉक्टरों ने बचने की संभावना काफी कम बताई लेकिन प्रयास करने से कुछ भी संभव है यह डॉक्टर भी जानते थे और ज्योतिष महोदय भी !!!
तो बच्ची का इलाज प्रारंभ कर दिया गया ।

जब परिस्थितियां जटिल हो जाती हैं.....
तो इलाज भी जटिल होता है ।
जैसा कि आप लोग जानते होंगे कि हमारे शरीर में खून बनाने का कार्य हड्डी के अंदर की मज्जा करती है ।
वहीं पर रक्त कोशिकाओं का निर्माण होता है । अब दिक्कत क्योंकि रक्त कोशिकाओं की ही थी । इसलिए उसका इलाज भी वहां से प्रारंभ होना था, जहां से उसका निर्माण होता है .... अर्थात हड्डियों की मज्जा से ।

इसके लिए जो प्रक्रिया अपनाई जाती है वह बेहद भयानक और जटिल होती है । इसमें हड्डी को आरी से काटकर मज्जा तक पहुंचा जाता है और उसमें दवाइयों को प्रविष्ट कराया जाता है .....
बच्ची को इस सारी दर्दनाक प्रक्रियाओं से गुजारा गया ! लेकिन.....
इन सारे उपक्रमों के बाद भी उसे बचाया नहीं जा सका । लगभग 4 महीने के बाद उसकी मृत्यु हो गई ।

ज्योतिष महोदय इस घटना से बुरी तरह विचलित हुए । वह महीने भर तक इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर पाए । फिर धीरे-धीरे सामान्य होने लगे । इस घटना के बाद उन्होंने अपने सारे ज्योतिष के ग्रंथों को लाल कपड़े में लपेटकर शिवनाथ नदी में विसर्जित कर दिया , और कान पकड़कर ज्योतिष से तौबा कर ली । उस दिन के बाद उन्होंने ना किसी की कुंडली देखी और ना ही किसी का भविष्य बाँचा । इस घटना ने उन्हें ज्योतिष और भविष्यवाणियों से बिल्कुल परे कर दिया ।

जब अपने किसी करीबी व्यक्ति के विषय में इस प्रकार की जानकारी होने लगती है तो हमारे अंदर एक अजीब सा वैराग्य भाव पैदा होता है .....

ठीक वैसा ही वैराग्य भाव उस ज्योतिषी के अंदर भी पैदा हो गया था ।

वह दिन है और आज का दिन .....

वे लगभग 65 साल की आयु के हो चुके हैं लेकिन उन्होंने उस दिन के बाद किसी की कुंडली को हाथ नहीं लगाया ।

खैर ...

इधर भवानी और मुंशी जी मेरे विवाह के लिए लड़की ढूंढ रहे थे ....

जो कि मैं नहीं करना चाहता था ।

एक दिन यूं ही बैठे बैठे मां की तस्वीर पर मेरी नजर जाकर रुक गई !

मन में विचार आया कि उनका भूतकाल देख लिया जाए ।

यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी गलती थी.....

क्योंकि जो मुझे पता चलने वाला था .....

वह मेरे जीवन का एक टर्निंग प्वाइंट बन गया ।

जैसा कि मैंने आपको बताया था कि पिशाचीनी भूतकाल के विषय में स्पष्ट जानकारी देने में सक्षम थी । वह सारी बातें इस प्रकार से बताती थी कि सामने वाले का जीवन किसी चलचित्र की तरह मेरे सामने स्पष्ट हो जाता था ।

जब मैंने अपनी माता के विषय में पूछा तो वह भी उसी प्रकार से स्पष्ट होने लगा और जो स्पष्ट हुआ वह.....

मेरे मानस पटल पर जो चित्र सामने आया उसमें मेरी मां लगभग दस बारह वर्ष की अवस्था की दिखाई दे रही थी । विधवा मां के साथ वह एक झोपड़ी जैसी जगह पर रह रही थी ।
समय आगे बढ़ा । कुछ साल बीतने के बाद उसकी मां का देहांत हो गया और वह मामा के पास चली गई । वहीं पर मेरे पिता के साथ उनका विवाह संपन्न हुआ और वह एक गरीब घर से निकलकर एक अति समृद्ध परिवार में आ गई । पिताजी की आयु उस समय मां से लगभग दोगुनी से भी ज्यादा थी । विवाह के पश्चात मां

गर्भधारण करती और कुछ महीने के बाद उनका गर्भपात हो जाता । इस प्रकार की घटनाएं दो तीन बार हो चुकी थी और वह उससे विचलित हो गई थी । ऐसे मे घर का नौकर बंशी उनका खयाल रखता और सेवा टहल करता ।

पिता का स्वास्थ्य भी अब कमजोर होने लगा था और उसके बाद जो मैंने देखा वह बेहद शर्मनाक था ।

मेरी मां रात के अंधेरे में अपने कमरे से निकलकर घर के नौकर बंशी के कमरे की ओर जा रही थी जो लगभग उनका हमउम्र था ।

उसके बाद वही हुआ जो ऐसे अवसरों पर होता है ।

ऐसा लगातार चलता रहा और उसके बाद वह गर्भ से हो गई .....

और मेरा जन्म हो गया.....

मैं यह जानकर अत्यंत विचलित हुआ कि मैं घर के नौकर का अंश हूं !

अपनी माता की नाजायज संतान हूं !

यह सत्य मेरे मन को विचलित करने लगा !

मैं समस्त कुकर्म करता था लेकिन फिर भी मुझे अपने ब्राह्मण होने का अभिमान हमेशा रहता था ! जिसे लोगों

द्वारा महाराज ! के नाम से पुकारे जाने से और बल मिलता था .....

मेरा वह अभिमान भंग हो चुका था !

अब ज्योतिष के कार्य में मेरा बहुत ज्यादा मन नहीं लगता था ।

बार-बार मेरे मानस पटल पर वही दृश्य आ जाता और मुझे अपने आप से घृणा होने लगी थी । पिशाचीनी का भोग भी जारी था । हर बार जब वह मुझे भोग कर जाती तो मुझे रक्तस्राव होने लगता था ..... जो अब कई बार एक एक हफ्ते तक रहता था ।

मैंने कई जगह इसकी जांच करवाई लेकिन डॉक्टर मर्ज को पकड़ नहीं पाए । पिशाचिनी की लीला वे पकड़ भी कैसे पाते ।

उन्होंने पेट में अल्सर होने से लेकर बहुत सारी संभावनाएं जताई और उसके साथ ढेर सारी दवाइयां भी खिलाई .....

लेकिन उन सब से कोई खास राहत नहीं मिलती थी ।

जब भी वह मेरे साथ रात गुजारती तो अगला हफ्ता मेरा इसी प्रकार दर्द और तकलीफ के साथ गुजरता .....

फिर लगभग 1 हफ्ते ठीक ठाक रहता ।

तब तक फिर से उसके आने का समय हो जाता.....
यानी कुल मिलाकर यूं समझ लीजिए कि महीने के 15 दिन मैं बड़ी तकलीफ में गुजारता और बाकी के 15 दिन ठीक ठाक रहता ।
ऐसे ही जिंदगी चल रही थी .....
अपने जन्म के विषय में जानने के पश्चात मेरे अंदर ग्लानि का भाव बहुत ज्यादा भर गया !
मैं अपने जीवन से ही विमुख होने लगा !!
इसी ग्लानि और वितृष्णा के भाव के चलते एक दिन मैं चलती ट्रेन के सामने कूद गया !
तब भी मैं मर नहीं पाया .....
पिशाचीनी ने मुझे बचा लिया ।
इस दुर्घटना में मेरा बाया पाव बुरी तरह से जख्मी हो गया , गैंग्रीन हो गया और उसे घुटने के नीचे से काटना पड़ गया ।
अब मैं विकलांग भी हो चुका था ।
उसके बावजूद पिशाचीनी का भोग निरंतर जारी था ।
यहां तक कि जब मैं अस्पताल में भर्ती था तब भी उसने मुझे नहीं छोड़ा .....
अगले दिन से रक्तस्राव प्रारंभ हो गया था .....

उन्होंने भी काफी जांच की लेकिन वह भी उसका स्रोत नहीं ढूंढ पाए ।
लगभग डेढ़ माह तक इलाज चलता रहा और उसके बाद अपने डेढ़ पैर के साथ में वापस गांव आ गया ।
अब बहुत ज्यादा सफर करना मेरे लिए तकलीफ वाली बात थी । इसलिए मैंने कोलकाता वाला कार्यालय बंद कर दिया । जो लोग मुझसे मिलना चाहते थे उनसे अब मैं गांव वाले घर पर ही मिलता ।

लोगों से मिलना अब मुझे अच्छा नहीं लगता था । प्रसिद्धि और धन पर्याप्त से भी ज्यादा मात्रा में मिल चुका था । लोगों की संख्या कम करने के लिए मैंने अपनी फीस बढ़ा दी थी और अब मेरी फीस ₹5000 हो चुकी थी ।
इतनी फीस देकर मिलने वालों की संख्या बहुत कम हो जाती है ..... इसलिए अब मेरा समय ज्योतिष के कार्य में कम ही लगता था ।
बाकी समय मैं अपने बिस्तर पर या आराम कुर्सी मे पड़ा रहता और अपने आप को कोसता रहता कि मैंने यह साधना क्यों की ???

धन और संपत्ति का कोई अभाव नहीं था .....
लेकिन उसका उपभोग करने के लिए या उसका आनंद उठाने के लिए न तो पत्नी थी और ना ही संतान .....
वैवाहिक जीवन मेरे लिए संभव नहीं था !
क्योंकि पिशाचीनी ने स्पष्ट कह दिया था कि अगर विवाह किया ..... तो वह पत्नी को सुहाग सेज पर ही समाप्त कर देगी !
इस भय से मैंने विवाह भी नहीं किया ।
शीतल के साथ जिस प्रकार का व्यवहार उसने किया था .....
उसे देखते हुए किसी दूसरी स्त्री के निकट जाने की हिम्मत भी नहीं हुई और अपनी नपुंसकता को देखते हुए इसका प्रयास भी नहीं किया ।
कुल मिलाकर मेरा जीवन नरक की तरह हो चुका था .....
जिसे मैं जी रहा था !
यूं कह लीजिए कि अपनी ही लाश को अपने कंधों पर लादकर घूम रहा था ।

आज मेरे पास सब कुछ है .....

लेकिन कुछ भी नहीं है ।
समाज की नजरों में मैं प्रतिष्ठित व्यक्ति हूं !
ज्ञानी ज्योतिषी हूं !!
धनवान हूं !!!

लेकिन अपनी नजरों में मैं बुरी तरह से गिर चुका हूं !
विवाह नहीं कर सकता !
नपुंसक हूँ !
पिशाचिनी से भोग के लिए विवश हूँ !
विकलांग हूँ !
रक्तस्राव से परेशान हूँ !

मंदिर नहीं जा सकता !
पूजा नहीं कर सकता !!
मंत्र नहीं पढ़ सकता !!!

न गृहस्थ हूँ !
न सन्यासी हूँ!!
न अघोरी हूँ !!!
मैं खुद नहीं जानता कि मैं क्या बन गया हूँ ?
कभी कभी लगता है कि मैं भी पिशाच बन गया हूँ !

अपने जीवन से मुझे वितृष्णा हो चुकी है !

मैं इस शरीर को छोड़ना चाहता हूं !

लेकिन .....

पिशाचीनी मुझे मरने भी नहीं देती है ।

जब भी मैं ऐसा कोई प्रयास करता हूं तो वह उसे विफल कर देती है .....

और.....

कहती है - अभी तेरा समय नहीं आया । अभी तो तेरा शरीर युवा है । मैं इसे भोगूंगी !

जब तेरा शरीर जर्जर हो जाएगा तब मैं तुझे अपने साथ पिशाच लोक मे ले जाऊँगी .....

अब मेरे पास इंतजार के सिवा कुछ भी नहीं बचा है !

----- समाप्त -----

प्रिय पाठक पाठिकाओं ,

सादर नमस्कार,

यह उन सभी साधकों के लिए एक संदेश है जो जल्दी सफलता प्राप्त करने के चक्कर में भूत प्रेत जैसे साधना को करने की सोचते हैं ।

यह संभव है कि आप इसमें जल्दी सफलता प्राप्त कर लें लेकिन कुछ समय के बाद वही सफलता आपको किसी अभिशाप की तरह लगने लगेगी । आप और आपकी आने वाली पीढ़ियां एक अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश हो जाएगी ।

इसलिए प्रयास कीजिए कि श्मशान, कब्रिस्तान, मजार, भूत, प्रेत, पिशाच, ब्रह्म, जिन्न आदि से बचकर रहें । केवल देवी देवताओं की साधनाएं करें और उनकी कृपा से अपने जीवन को और अपनी आने वाली पीढ़ियों को ऐश्वर्य और समृद्धि से युक्त बनाने की दिशा में अग्रसर हो ।

सस्नेह